



GULDASTA

(for Children)

By Dr. Azhar Abrar

کالج کا پورا اسٹاف اس بات کی گواہی دیتا ہے کہ وہ کبھی بھی فضول کام میں نظر نہیں آئے۔ انھیں ریکارڈ کرنے کی عادت ہی نہیں۔ یا تو کلاس لیں گے یا پھر مطالعے میں مصروف رہیں گے۔ لکھنا پڑھنا ان کا اولین شوق ہے۔ جب کالج کی لائبریری کے لیے کتابیں خریدنے کا موقع آتا ہے تو نہایت دلچسپی اور احتیاط سے کتابوں کا انتخاب کرتے ہیں۔ زیادہ تر ان کتابوں پر نظر رہتی ہے جسے پڑھ کر بچوں کو کچھ فائدہ حاصل ہو۔ جب بچوں کو ہوم ورک کے طرز پر کوئی کام دیتے ہیں تو وہ ایسا ہوتا ہے کہ لامحالہ بچوں کو کتابیں کالج سے لینا پڑتی ہے۔ بچے لائبریری سے کتاب لے جاتے ہیں پڑھتے ہیں پھر ان کا کام مکمل ہوتا ہے۔ اس طرح بچوں کو کچھ نیا پڑھنے بھی مل جاتا ہے۔ وہ انٹرنیٹ سے مواد حاصل کرنے سے منع کرتے ہیں۔ اگر پڑھ کر کچھ حاصل کیا جائے تو انٹرنیٹ کی مدد لینا ضروری نہیں ہوتا پھر کتابوں سے حاصل کیا گیا مواد مستند بھی ہوتا ہے آپ کا حوالہ دے سکتے ہیں وہ طالب علموں کو یہی بات سمجھاتے ہیں۔

محمد اسرار

’گلدستہ‘ دراصل بچوں کے لیے ترتیب دیا گیا ہے لہذا ادب اطفال سے متعلق مضامین ہی اس میں شامل کیے گئے ہیں اور اردو زبان و ادب کی وہ ہستیاں جو ادب اطفال میں نمایاں کردار ادا کر رہی ہیں ان کے فن پر ان کی شخصی جہتوں پر اور ان کی کارگذاریوں پر بھی بھرپور معلومات پہنچائی گئی ہے۔ ان سے ڈاکٹر اظہار اس صاحب کے تخیلی وسعت کا بھی اندازہ ہوتا ہے۔ زبان و بیان پر گرفت کا بھی علم ہوتا ہے۔ نثر کے ساتھ ساتھ موصوف نے شاعری بھی کی ہے۔ ان نظموں کے مطالعہ سے اندازہ ہوتا ہے کہ بچوں کے لیے سلاست اور اختصار جو بچوں کے ادب کا ضروری جز ہے وہ تو ہے ہی اور مضامین جو بچوں کی رہنمائی اور ادبی لیاقت میں اضافے کا سبب بنیں وہ سب ان نظموں میں بدرجہ اتم موجود ہیں۔

وکیل نجیب

مقام مسرت ہے کہ اب وہ بچوں کی طبع نا تخلیقات کا مجموعہ ’گلدستہ‘ کے عنوان سے شائع کرنے جا رہے ہیں۔ عام طور پر کسی ایک صنف پر مجموعہ مشتمل ہوتا ہے۔ مگر ڈاکٹر اظہار نے اپنے اس مجموعہ میں نہ صرف دلچسپ نظمیں اور کہانیاں شامل کی ہیں بلکہ بچوں کی چند تصانیف پر قلمبند کیے گئے تجزیاتی مضامین اور بچوں کے ادیب وکیل نجیب اور شاعر ڈاکٹر عبد الرحیم نشتر سے لیے گئے انٹرویو بھی شامل کر دیے ہیں اس طرح یہ مجموعہ ہمدرد نگ اصناف سے مزین ہو کر منظر عام پر آ رہا ہے۔

ڈاکٹر اشفاق احمد



ALFAZ PUBLICATION

A Unit of VMMRDES

(Govt. of Maharashtra Regd. No. 1852300311564012)

Phutana Oli, Kamptee - 441001 Dist. Nagpur Mob.: 7721877941



₹ 100/-

فہرست

| صفحہ نمبر | عنوان |
|-----------|--|
| 1 | آواز دے کہیں سے |
| 11 | دل کی گلیاں |
| 24 | یہ محبتوں کے چراغ ہے |
| 71 | شامِ محبت |
| 101 | غمِ زندگی تیری راہ میں |
| 112 | رتجگے مقدر تھے |
| 131 | دل، دعا اور یاد |
| 151 | پچھڑے ہوئے ساحل |
| 187 | محبت مار دیتی ہے |
| 216 | ہم تیری منزل نہ تھے |
| 229 | تنہا تنہا دل |
| 249 | انٹرویو کے آئینے میں |
| 258 | تبصرے و تاثرات |
| | ڈاکٹر صفدر، امر اوتی۔ سید غلام علی بیابانی، اچلپور |
| | ایڈووکیٹ حبیب ریہہ پوری۔ ڈاکٹر اشفاق احمد، ناگپور |
| | ڈاکٹر اظہر ابرار کامٹی۔ بابو آر۔ کے اچلپور |
| | رومانہ عفت راہی، اچلپور۔ رضوانہ ساگر روزی، اچلپور |

ऐतिहासिक परिपेक्ष में
भारतीय महिला

Indian Women in Historical Perspective



डॉ. सूर्यकांत कापशीकर



ऐतिहासिक परिपेक्ष में भारतीय महिला
Indian Women in Historical Perspective
Editor : Dr. Suryakant Kapshikar

Published by :

Dr. Dhanraj Shate

Principal

Yashoda Girls' Arts & Commerce College

Sneh Nagar, Nagpur M.S. (India)

Accredited B++ with 2.82 CGPA for First Cycle by NAAC

Tel. : 0712-2290637 Fax No. 0712- 2290368

Email : ygc.ngp@rediffmail.com

Website : www.ygcngp.org

Copyright©

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise with the prior permission of the Editor.

The papers included in this publication have been directly reproduced with minimum editorial intervention, from the files sent by the respective authors. The responsibility for facts states, opinions, expressed or conclusion reached and plagiarism if any, in this book is entirely that of the authors/contributors.

The Editor, Advisory Committee, Editorial Board Members & Peer Reviewed Committee Printer bears no responsibility for them; whatsoever.

In case of any dispute all legal matter are to be settle under Nagpur Jurisdiction only

Edition : 2019

ISBN - 978-81-920781-6-8

Price : 375/-

Designed & Printed by

Dinesh Graphic

Trimurti Nagar, Nagpur-440022

M.9422119631/9765762211

| | | |
|-----|--|-----|
| ३८. | इंदिरा गांधीच्या गटनिरपेक्षता धोरणाचा प्रभाव | १८६ |
| | डॉ. माधुरी एन. देवतळे | |
| ३९. | इरावती कर्वे यांचे समाजशास्त्रीय योगदान | १९३ |
| | डॉ. संतोष मेंढेकर | |
| ४०. | दुर्गा भागवत : थोर ज्ञानोपासक | १९८ |
| | डॉ. वनिता हिंगे | |
| ४१. | रोमिला थापर: एक प्रभावशाली महिला इतिहासकार | २०० |
| | डॉ. सुर्यकांत महादेवराव कापशीकर | |
| ४२. | दलित स्त्रीवादी लेखिका : उर्मिला पवार | २०९ |
| | प्रा. डॉ. सिद्धार्थ भ. जाधव | |
| ४३. | सीमाताई साखरे यांचे स्त्रि चळवळीत योगदान | २१५ |
| | डॉ. कुंदन देवराव शहारे | |
| ४४. | सिंधुताई सपकाळांचे सामाजिक कार्य | २१८ |
| | डॉ. महेश प्रल्हादराव गोमासे | |
| ४५. | सरोजताई काशीकर : व्यक्ती आणि कार्य | २२३ |
| | श्री. अविनाश ब. अवचट | |
| ४६. | सुनंदाताई दिवे यांची बचतगटातून यशोगाथा | २३० |
| | डॉ. रश्मी प्रविण गजरे | |
| ४७. | डॉ. प्रभा अत्रे का संगीत कला में योगदान | २३४ |
| | डॉ. सोपान सिताबराव वतारे | |
| ४८. | The Actress Is Irreplaceable In Indian Cinema: Smita Patil | २३६ |
| | Chandrashekhar Laxmanrao Korey | |
| ४९. | Contribution of Dr. D. Rajyalaksmi to LIS Profession | २४० |
| | Dr. Sudhakar S Thool | |
| ५०. | पहिली भारतीय अंतराळ स्त्री : कल्पना चावला | २५३ |
| | डॉ. कल्पना एम.सांगोडे | |
| ५१. | मायावती : कार्य आणि कर्तृत्व | २६१ |
| | प्रा. किशोर शेषराव चौरे | |
| ५२. | भारतीय दलित महिला उद्योजक कल्पना सरोज | २६९ |
| | डॉ. प्रा. सिद्धार्थ हरिदास मेश्राम | |
| ५३. | आयेशा ग्रेवाल यांचे शेती क्षेत्रातील योगदान | २७४ |
| | डॉ. महेन्द्रकुमार कटरे | |
| ५४. | Magnificent Mary Kom- Indian Women Boxer | २७७ |
| | Dr. Lalita ishwarn Punnya | |

भारतीय दलित महिला उद्योज : कल्पना सरोज

डॉ. सिद्धार्थ हरिदास मेश्राम

सहाय्यक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग

सेठ केसरीमल पोरवाल कला, विज्ञान आणि वाणिज्य महाविद्यालय, कामठी, जि. नागपूर.

प्रास्ताविक

प्रत्येक राष्ट्राचा आर्थिक विकास हा राष्ट्रातील उद्योजकतेवर अवलंबून असतो. उद्योजकता हा पुरुषाचा प्रांत आहे अशी धारणा प्रचलित आहे. हिच परिस्थिती भारतात महिलांना उद्योजक बनण्यासाठीची आहे. महिलांना पाहिजे त्या प्रमाणात संधी उपलब्ध नाहीत. त्याचप्रमाणे एखाद्या उद्योगाचे नेतृत्व करण्यासाठीही कमी वाव आहे असे मास्टर कार्ड इंडेक्स ऑफ विमेन अहवाल सांगतो. शिक्षणाचा अभाव, सामाजिक संरचना, तंत्रज्ञान विषयक अज्ञान, संस्कार व चालीरितीचा पगडा यामुळे भारतात महिलामध्ये उद्योजकता रुजविण्यात अडचण येत आहे. भारतामध्ये चौथ्या सुक्ष्म, लघु व मध्यम उपक्रमाच्या माहिती विश्लेषण अहवालात स्त्रियांनी सुरु केलेल्या उद्योगाचे प्रमाण १३.८ टक्के असून महाराष्ट्रात ते प्रमाण फक्त ९ टक्के आहे ही महिला उद्योजकाची शोकांतिका आहे. अशाही परिस्थितीत भारतात ज्या महिलांनी उद्योजक क्षेत्रात महत्वाची भूमिका पार पाडली आहे. त्या महिलामागे पिढीजात असलेला गडगंज पैसा, संपत्ती व त्यांच्या पतीचे किंवा वडीलांचे असलेले मोठे उद्योग हे आहे. त्यामध्ये फोर्ब्सच्या अहवालानुसार प्रामुख्याने नीता अंबानी, अरुंधती भट्टाचार्य, अंबिगा धीरज, दिपाली गोएन्का, विनिता गुप्ता, चंदा कोचर, वंदना लुधरा आणि किरण मुजूमदार शाँ यांचा समावेश आहे. यासोबतच कोणतीही आर्थिक पार्श्वभूमी नसलेली, शुन्यातुन विश्व निर्माण करणारी, दलित, पिडीत, शोषित समाजातील बौद्ध महिला उद्योजक म्हणजे कल्पना सरोज होय.

कल्पना सरोज या भारतातल्या सर्वात यशस्वी महिला उद्यमीपैकी एक आहे. त्यांच्या जीवन संघर्षाची कहाणी वेगळी असून जनमानसावर छाप पाडणारी आहे. त्यांची कहाणी शुन्यातुन विश्व निर्माण करणाऱ्या एका गावातल्या दलित महिलेची आहे. त्यांच्या जीवनात संघर्ष आहे, नैराश्य आहे, निरागसता आहे, अपयश दडलेले आहे. मात्र या अपयशातच यशाचे बिज पेरलेले असते हे साध्य करणारी एक बुद्धिष्ट महिला आहे. शेणाच्या गोवऱ्या विक्रीपासून ते थेट कोट्यावधीचा व्यवसाय करणाऱ्या या यशस्वी दलित महिला उद्योजकाचा जीवन प्रवास थक्क करणारा आहे. एक गरिब महिला ज्यांच्याकडे मुंबईमध्ये राहायला घर देखील नव्हते. त्यांनी बांधकाम व्यवसायात यशाची शिखरे पादाक्रांत करत मुंबई सारख्या मायानगरीमध्ये एक यशस्वी उद्योजक (व्यावसायिक) म्हणून नाव कमविले आहे. एका दलित कुटूंबात जन्म झालेल्या सरोज यांच्या घरात कोणताही

व्यावसायिक चारसा नसतांना प्रसिद्ध उद्योगपती रामजी हंसराज कमानी यांच्या बुडीत खात्यात गेलेल्या कोट्यावधीच्या कंपनीला पुन्हा उभारी देत त्यांच्या मालकीन झाल्या. कल्पना सरोज यांनी आपल्या जीवनात, जातीवाद, गरिबी, बाल.विवाह, सासराच्या लोकांकडून छळ, अपमान, निंदा, तिरस्कार, धमक्या व अपघात या सर्व गोष्टींचा अनुभव घेतला. अशा अनेक असह्य परिस्थितीमोर् हतबल न होता, प्रतिकुल परिस्थितीला न जुमानता मेहनत, इमानदारी, जिद्द, साहसी वृत्तीने मार्गक्रमन करत उत्तुंग शिखर गाठणाऱ्या कल्पना सरोज यांच्या जीवन संघर्षाची गाथा सर्वसामान्यांना विचार करण्यास भाग पाडते.

जीवन परिचय

भारतातील महाराष्ट्र राज्यातील (विदर्भातील) रोपरखेडा ता. मुर्तिजापूर जि. अकोला येथील एका बौद्ध कुटूंबात कल्पना सरोज यांचा जन्म झाला. त्यांचे वडील पोलिस खात्यात हवालदार असल्यामुळे त्यांचे कुटूंब पोलिस क्वार्टरमध्ये राहत होते. त्यांच्या कुटूंबात तिन बहिनी व दोन भाऊ होते. बहिण भावंडामध्ये कल्पना सर्वात मोठ्या होत्या. मुलीने खुप शिकावे ही त्यांच्या वडिलांची इच्छा होती. परंतु नातेवाईकांच्या आग्रहाखातर त्यांचे लग्न बालवयात म्हणजे वयाच्या बाराव्या वर्षी झाले.

वैवाहिक जीवन

बारा वर्षांच्या कल्पना यांचा विवाह त्यांच्यापेक्षा दहा वर्षांनी मोठ्या व्यक्तीशी झाला. लग्नानंतर पतीसह ते मुंबईला स्थायिक झाले. परंतु मुंबईचे जे चित्र रंगविण्यात आले होते ते प्रत्यक्षात खुप वेगळे होते. त्यांचे सासर हे एका झोपडपट्टीत होते. एकाच खोलीमध्ये सर्व कुटूंब राहत होते. सासरी मोठे कुटूंब असल्यामुळे घरच्या सर्व कामाचा भार तसेच घरकामे न झाल्यास मारहाण यामुळे त्यांची शारीरिक अवस्था कृश व बिकट झाली होती. कामाच्या व्यापामुळे वेळेवर जेवण सुद्धा मिळत नसे. कल्पना यांच्यासाठी हे दिवस अवमान, त्रास, शोषण आणि दुःख यांचे होते. यासर्व बाबीची कल्पना माहेरच्या मंडळीना माहिती व्हावी असे त्यांना वाटत होते. परंतु कोणत्याही प्रकारचा संपर्क सासरची मंडळी होऊ देत नव्हती. लग्नानंतर सहा महिन्यांनी त्यांचे वडील कल्पना यांच्या घरी गेले तर ते कल्पनाला ओळखु देखील शकले नाही अशी स्थिती त्यांची झाली होती. लगेचच कल्पना यांच्या वडिलांनी त्यांना कायमचे त्यांच्या घरी म्हणजे माहेरी आणले. सासर सोडुन माहेरी आल्याने त्यांच्यावर वारंवार टिका टिप्पणी होऊ लागली. जवळच्या नातेवाईकांनी त्यांना सासर सोडल्याबद्दल दुषणे देण्यास सुरुवात केली. या सततच्या टोमण्यामुळे नैराश्यातुन आत्महत्या करण्याचा प्रयत्न केला परंतु त्यामधून त्या बचावल्या. त्यानंतर मात्र त्यांनी स्वतःला खंबीर व जिद्दी बनविले.

आर्थिक क्षेत्रात प्रवेश

गावामध्ये फक्त शेती कामच होते. त्यांना शेतवार काम करायचे नव्हते. पुढे काही दिवसांनी काम करण्यासाठी त्यांनी मुंबईला परतण्याचा निर्णय घेतला. आता परिस्थितीशी लढायचे असा पक्का निर्धार केला. त्या मुंबईलात दादरला त्यांच्या काकाकडे रहायला गेल्या. तेथे एका गारमेन्टच्या कंपनीत मदतनिस (हेल्पर) म्हणून कामाला लागल्या. त्यावेळी त्यांना दररोज फक्त दोन रुपये मजुरी मिळत असे. म्हणजे त्यांना महिण्याकाठी साठ रुपये पगार मिळायचा. तेव्हा त्यांचे वय १६ वर्षे होते. त्यानंतर त्याच कंपनीत शिवण काम करायला सुरुवात केली. तेव्हा त्यांचा पगार ६० रुपयांवरून २२५ रुपये इतका झाला. तेवढ्यात काही कारणास्तव वडिलांची नोकरी गेली. त्यामुळे घरात सर्वात मोठी या नात्याने घरची सगळी जबाबदारी त्यांच्यावर आली. पैशाची ओढाताण सुरु झाली म्हणून त्यांनी घरी कपडे शिवण्याचे काम सुरु केले. दरम्यान त्या रोज १६.१६ तास काम करीत असत. अशा कठिण परिस्थितीत त्यांच्या लहान बहिणीला कॅन्सर झाला. पैशाअभावी पुरेसा उपचार न करता आल्यामुळे तिचा मृत्यू झाला. त्यावेळीच कल्पना यांनी निश्चय केला की, व्यवसाय करून आर्थिकदृष्ट्या मजबूत व्हायचे. त्या आणखी जिद्दीने पेटल्या. त्यांनी ज्योतिबा फुले योजनेअंतर्गत कर्ज घेऊन त्यांनी काही शिलाई मशिन विकत घेतल्या व कपडे शिवण्याचा व्यवसाय सुरु केला. त्यानंतर परत कर्ज घेऊन फर्निचर विकायचा व्यवसाय सुरु केला. आता त्यांच्या आर्थिक परिस्थितीत हळूहळू बदल होत होता. त्यांच्याकडे थोडे फार पैसे सुद्धा जमा झाले होते. तेवढ्यातच एक भुखंड विक्रीस आहे व तो तुम्ही घ्या असा त्यांना प्रस्ताव आला. जमिन मालकाला पैशाची अत्यंत गरज होती. जमिन मालक कुठल्याही किंमतीत द्यायला तयार होता. कारण तो भुखंड जरी मोक्याच्या ठिकाणी होता पण न्याय प्रविष्ट असल्यामुळे त्याची किंमत कमी झाली होती. कल्पना सरोज यांनी तो विकत घेतला व बरेच दिवस न्यायालयात पायपीट करून जमिनीचे सगळे अडथळे दूर केले. नंतर रातारात त्या भुखंडाची किंमत वाढली. यामुळे भुमाफियांनी त्यांना धमकावण्याचा प्रयत्न केला. परंतु त्या खंबीर असल्यामुळे डगमगल्या नाहीत. पुढे एका सिंधी समाजाच्या, बिल्डरच्या भागीदाराने (३५ टक्के आणि ६५ टक्के) तेथे एक बहुमजल्याची इमारत उभी केली. त्यामधून कल्पना सरोज यांना तब्बल ५ कोटीचा फायदा झाला. त्यांनी बांधकाम व्यवसायात प्रवेश केला आणि मग त्यांनी कधीच मागे वळून पाहिले नाही. बांधकाम व्यवसायात आल्यावर कल्पना यांना यशाच्या नव्या कहाणीचा जन्म झाला. त्यांनी अनेक प्रकारचे उद्योग सुरु केले. लवकरच त्यांची व्यापारी आणि उद्योजिका अशी नवी ओळख निर्माण झाली. १९९९ मध्ये त्यांनी अहमदनगर येथे साईकृपा साखर मिलचा व्यवहार केला. बबनराव पाचपुते यांच्या सल्ल्याने त्यांनी साखर कारखाना सुरु केला आणि संचालक बनल्या. रामजी हंसराज कमानी एक स्वातंत्र्य सेनानी व प्रख्यात उद्योजक होते. कमानी यांची महात्मा गांधी आणि पंडित नेहरु यांच्याशी जवळीक होती. स्वातंत्र्यानंतर त्यांनी कुर्ला येथे येऊन कमानी ट्युबस व कमानी इंजिनियरींग ही ब्रास व ट्युब तयार करण्याची कंपनी १९४५ मध्ये सुरु केली. त्यांच्या मृत्यूनंतर (१९६५) त्यांच्या मुंलामध्ये संपत्तीवरून वाद निर्माण झाले. त्यामुळे हायकोर्टाने त्या कंपनीची मालकी कामगार

युनियनकडे सोपविली. त्या कंपनीचे २००० कामगार मालक झाल्याने काही दिवसामध्येच कंपनीवर खुप कर्ज झाले व त्यानंतर ती बंद पडली. कर्ज परतफेडीसाठी ती कंपनी उच्च न्यायालयाने लिलावात काढली. कल्पना सरोज यांच्याकडे कामाला असलेल्या काही लोकांनी ही बातमी त्यांच्या कानावर घातली आणि ती कंपनी तुम्ही विकत घ्या असा आग्रह केला. कल्पना सरोजनी त्या कंपनीची इंत्यभुत माहिती घेऊन ती कंपनी अखेर विकत घ्यायचे ठरविले. परंतु तिथे दोन मोठे अडथळे होते. एक म्हणजे त्या कंपनीवर असलेले कर्ज व दुसरे १४० प्रलंबित न्यायालयीन खटले होय. त्यांनी तब्बल २००० सालापासून तर २००६ पर्यंत कोर्टात सतत चकरा मारून सगळी न्यायालयीन प्रकरणे मोडित काढली. शेवटी २००६ मध्ये हायकोर्टानी त्यांना कंपनीचे सर्वेसर्वा बनवून त्या कंपनीवरील कर्ज फेडायला सात वर्षांची मुदत दिली. कल्पना सरोज यांनी या संधीचे सोने करून देणगीदार व बँकांसोबत बोलून कंपनीवरील दंड (पेनाल्टी) व व्याज माफ करवून घेतले. त्यामुळे कंपनीवरील कर्जाची रक्कम ही अर्ध्यावर आली. शेवटी उरलेले ११६ कोटीचे कर्ज त्यांनी एका वर्षात फेडले. सोबतच कामगारांचा थकीत पगारही देऊ केला. काही दिवसामध्येच तोट्यात असलेल्या कंपनीचे रूपांतर नफ्यामध्ये असलेल्या यादामध्ये आणले. अशाप्रकारे त्यांनी कमानी ट्युबस कंपनी आपल्या ताब्यात घेतली. आज त्या कंपनीचे बाजार मुल्य ७५० कोटी पेक्षा जास्त आहे. कुर्ला येथील एका भागाला कुर्ला कमानी हे नाव याच कंपनीची देण आहे. तसेच कल्पना सरोज ह्यांची एकूण संपत्ती ही १२२ मिलीयन डॉलर एवढी आहे.

सामाजिक कामगिरी

कल्पना सरोज यांना सामाजिक कामगिरीमध्ये खुप आवड आहे. त्यांनी कमानी ट्युब कंपनीला संजीवनी देऊन २००० कामगारांना रोजगार प्राप्त करण्यात महत्वाची भूमिका पार पाडली. शासनाच्या योजनांचा बेरोजगारांना लाभ व्हावा म्हणूनच त्यांनी सुशिक्षित बेरोजगार युवा संघटन नावाची संस्था सुरु केली. तसेच बेरोजगार तरुणासाठी शिबीर घ्यायला सुरुवात केली. समाजासाठी त्यांनी एक गैर सरकारी संस्था स्थापन केली. शिक्षण संस्था सुरु केली. दरवर्षी त्या डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या नावाने एक पुरस्कार प्रदान करतात. त्यांनी एक जै थप्सडे म्हणून प्रोडक्शन हाऊस सुरु केले. त्याच बॅनरखाली त्यांनी खैरलांजा नावाचा मराठी चित्रपट तयार केला. २०१६ मध्ये संयुक्त राष्ट्रसंघाच्या मुख्यालयी डॉ. बाबासाहेबाची १२५ वी जयंती साजरी झाली त्यामध्ये त्यांची मुख्य भूमिका होती. तसेच त्या संघटनेच्या सदस्या आहेत.

मुल्यांकन

कल्पना सरोज आज विविध प्रकारच्या व्यवसायात आहेत. त्या अनेक कंपन्यांच्या मालक आहेत. बांधकाम, पायाभूत सुविधा, ट्युबज, खाण उद्योग यामध्ये त्या प्रसिद्ध आहेत. त्यांनी सिनेक्षेत्रासह आदरातिथ्य क्षेत्र तसेच पर्यटनाच्या क्षेत्रातही हातपाय पसरले आहेत. कृषी आधारित

उद्योगातही त्या काम करीत आहेत. त्यांनी हवाई वाहतूक क्षेत्रामध्येही उड्डाण करण्याचे ठरविले आहे. करोडोची संपत्ती त्यांच्या नावे आहे. त्यांची गणना आता देशाच्या सर्वात यशस्वी महिला उद्योजिकांमध्ये केली जाते. समाजसेवक म्हणूनही त्यांची ओळख आहे. लोकांमध्ये धाडसी, प्रामाणिक म्हणून त्यांचा आदर्श सांगितला जात आहे. त्यामधून अनेक लोक प्रेरणा घेत आहेत. त्यांच्या जीवन संघर्षामध्ये शोषण, दुःख यांच्या सोबत यशाच्या मंत्राचा समावेश आहे. त्यामुळे निराश मनाला प्रेरणा मिळते. या यशाला अनेकांनी वाखाणले आहे. अनेक पुरस्कार त्यांना त्यासाठी देण्यात आले आहेत. त्यांच्या महिला सक्षमीकरण व उद्योजकता यासाठी भारत सरकारने इ. स. २०१३ साली त्यांचा पद्मश्री ही किताब देऊन गौरव केला. त्या भारतीय महिला बँकेच्या बोर्ड डायरेक्टर आहेत. हा बहुमान मिळविणाऱ्या त्या पहिल्या मराठी महिला आहेत. अशा महिलेचा आम्हाला सार्थ अभिमान राहिल यात काहीच शंका नाही.

संदर्भ सुची

- 1) *Joshi Sharrari, Loksatta Paper. Dated 11 April, 2015.*
- 2) *Mishra Vaibhav, Kalpana Saroj Success Story in Hindi.*
- 3) *Report of Master Card Index of Women Entrepreneurs (MIWE), 2018.*
- 4) *www.kalpanasaroj.com*
- 5) *www.gyanipandit.com*
- 6) *www.Bhaskar.com*
- 7) *www.Forbesindia.com*
- 8) *www.achhikhabar.coms*

महात्मा गांधी

जीवन, कार्य एवं विचार



संपादक
डॉ. सूर्यकांत कापशीकर

महात्मा गांधी: जीवन, कार्य एवं विचार
संपादक: डॉ सूर्यकांत कापशीकर
Mahatma Gandhi: Jivan, Karya evam Vichar
Editor: Dr Suryakant Kapshikar

सौजन्य:
डॉ धनराज शेटे
प्राचार्य
यशोदा गर्ल्स आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज
स्नेह नगर, नागपूर ४४००१७

सर्वाधिकार:
यशोदा गर्ल्स आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज
स्नेह नगर, नागपूर ४४००१७

प्रकाशक:
तृप्ती सूर्यकांत कापशीकर
कापशीकर प्रकाशन
बेलतरोडी नागपूर ४४००३७

प्रथम आवृत्ती:
३० जानेवारी २०२०

मुद्रक: दिनेश ग्राफिक्स नागपूर

किंमत:
४५० रुपये

ISBN: 978-81-943484-1-2



Copyright©

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise with the prior permission of the Editor.

The papers included in this publication have been directly reproduced with minimum editorial intervention, from the files sent by the respective authors. The responsibility for facts states, opinions, expressed or conclusion reached and plagiarism if any, in this book is entirely that of the authors/contributors.

The Editor, Advisory Committee, Editorial Board Members & Peer Reviewed Committee Printer bears no responsibility for them; whatsoever.

In case of any dispute all legal matter are to be settle under Nagpur Jurisdiction only

| | | |
|----|---|-----|
| 38 | प्रा. डॉ. प्रमिला डी. भोर, गांधीजी यांच्या नेतृत्वाखालील सत्याग्रह आणि आश्रम चळवळ | 246 |
| 39 | प्रा. डॉ. लया भास्कर भोज महात्मा गांधीजी यांचे आर्थिक व शैक्षणिक विचार | 251 |
| 40 | प्रा. डॉ. श्रीकृष्ण बोडे महात्मा गांधी आणि भारतीय स्वातंत्र्य चळवळ | 258 |
| 41 | डॉ. महेश प्रल्हादराव गोमासे विदर्भातील गांधीवादी लोकसेवका. कृ. पाटील | 263 |
| 42 | प्रा. प्रफुल्ल एम. राजुरवाडे राष्ट्रपिता महात्मा गांधीचे अर्थशास्त्र | 268 |
| | डॉ. सिध्दार्थ हरिदास मेश्राम | |
| 43 | गांधीजींची आरोग्य, आहार आणि स्वच्छता विषयक भूमिका | 276 |
| | प्रा. डॉ. ललिता ईश्वरन पुन्नरया | |
| 44 | महात्मा गांधी यांचे दक्षिण आफ्रिकेतील ऐतिहासिक कार्य | 280 |
| | प्रा. प्रितम वसंतराव गावंडे | |
| 45 | गांधीजींचे शिक्षण विचार | 292 |
| | प्रा. डॉ. एन. एस. गिरडे | |
| 46 | महात्मा गांधींचे सामाजिक व आर्थिक विचार | 296 |
| | प्रा. डॉ. आर. यु. हिरे | |
| 47 | महात्मा गांधींचा स्वच्छता, आरोग्य व पर्यावरणात्मक दृष्टीकोन | 299 |
| | प्रा. ईश्वर जणार्घनजी वाघ | |
| 48 | महात्मा गांधीजींचा अस्पृश्यांच्या सामाजिक अभिसरणाचा राजकीय दृष्टीकोन | 307 |
| | प्रा. डॉ. मुकुंदा गोपाळराव मेश्राम | |
| 49 | महात्मा गांधीजींचे आर्थिक विचार | 315 |
| | डॉ. प्रीती किषोर उमाठे | |
| 50 | महात्मा गांधीजींचा पंचायतराज व्यवस्थेच्या संदर्भात ग्रामविकास दृष्टिकोन | 319 |
| | प्रा. डॉ. कैलाश फुलमाळी | |
| 51 | महात्मा गांधींचा स्त्रीविषयक दृष्टिकोन | 322 |
| | प्रा. डॉ. सिध्दार्थ शिवजी वाठोरे | |
| 52 | महात्मा गांधींचे कल्याणकारी आर्थिक विचार | 326 |
| | डॉ. हितेश मा. दडमल | |
| 53 | महात्मा गांधीजींचे तत्वज्ञान व सर्वोदय चळवळ | 334 |
| | प्रा. डॉ. विद्या के. भैसारे | |
| 54 | महात्मा गांधीजींचे सामाजिक विचार | 343 |
| | डॉ. प्रकाश सोनक | |
| 55 | महात्मा गांधी आणि त्यांचे कार्य | 357 |
| | डॉ. रमा लांबट | |
| 56 | महात्मा गांधींच्या संकल्पनेतील ग्राम स्वराज्य | 365 |
| | डॉ. अभिलाशा राजत | |
| 57 | महात्मा गांधीजींचा स्त्रीविषयक दृष्टीकोन | 371 |
| | प्रा. डॉ. नंदकिशोर ल. अरुळकर | |
| 58 | महात्मा गांधींची अस्पृश्यतानिवारण आंतरविरोधी विचार व कृती | 376 |
| | प्रा. डॉ. उमेश जनबंधू | |

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीचे अर्थशास्त्र

डॉ. सिध्दार्थ हरिदास मेश्राम सहाय्यक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) सेठ
केसरीमल पोरवाल महाविद्यालय, कामठी

भारतीय आर्थिक विचारांच्या पध्दतशीर मांडणीला ख-या अर्थाने १९ व्या शतकापासून प्रारंभ झाला. भारतातील आर्थिक विचारांच्या विकासाचा सखोल अभ्यास करतांना महात्मा गांधी यांच्या तत्वज्ञानाचा विचार करावा लागतो. भारताचे राष्ट्रपिता म्हणून त्यांना गौरविले जाते पण एक अर्थशास्त्राचे गाठे तत्ववेत्ते म्हणून ओळख फार दुर्मिळ आहे. महात्मा गांधी हे एका अर्थाने अर्थशास्त्रज्ञ नव्हते आणि त्यांनी अर्थशास्त्र विषयक स्वतंत्र ग्रंथही लिहिला नाही. तथापि त्यांनी धर्म, राजकारण किंवा एकूणच जीवनाचे जे तत्वज्ञान मांडले त्यातच त्यांचे आर्थिक विचार विखुरलेले आढळतात. त्यांना एकत्रित करण्याचे काम त्यांच्या विविध अनुयायांनी केले. आज आपण गांधीवादी अर्थशास्त्राची चर्चा करीत असलो तरी या त-हेचे काही वर्गीकरण असू शकते हे गांधीजींना मान्य नव्हते. याचे कारण त्यांच्या दृष्टीने अर्थशास्त्र हे वेगळे नसून जीवनाच्या क्रमाचा व तत्वज्ञानाचाच एक भाग आहे. सत्य, अहिंसा, श्रमप्रतिष्ठा आणि साधेपणा या चार तत्वावर त्यांच्या आर्थिक कल्पना आधारित आहेत. त्या आर्थिक कल्पनाची मांडणी करण्याचा प्रामाणिक प्रयत्न या पेपरमध्ये करण्यात आला आहे.

साधेपणा

गांधीजींच्या मते, समाजातील प्रत्येक व्यक्तीने साधे जीवन जगण्याचा प्रयत्न केला तर सर्व प्रश्न आपोआप सुटतील. साधी राहणी उच्च विचारसरणीचा पुरस्कार गांधींनी केला. स्वेच्छेने साधेपणा व समाधानवृत्ती अंगी बाळगली पाहिजे. भौतिक गरजा वाढवत जाऊन मिळेल ते मिळवत जाण्याची हाव बाळगण्यापेक्षा इतरांना जे मिळत नाही ते आपल्यालाही नको अशी आत्मसंयम वृत्ती जोपासणे हे व्यक्तीच्या जीवनाचे सूत्र होऊ शकेल. सुखाची अवस्था ही प्रामुख्याने मानसिक अवस्था असते. प्रत्येक भारतीय माणसाने देशाची परिस्थिती लक्षात घेऊन आपल्या गरजा कमी करायला शिकले पाहिजे. जीवनाच्या प्रत्येक क्षेप्रात सचोटी, प्रामाणिकपणा व संयम दाखवून आचार प्रचारात सुरंगती ठेवली पाहिजे.

व्यक्तीविकास

गांधीजीच्या मते, विकासाची प्रक्रिया ही अत्योदयाकडून सूर्योदयाकडे जाणारी असावी म्हणजेच समाजातील सर्वात दुर्बल, गरीब व्यक्तीचा विकास झाला तरच समाजातील सर्वांचा, संपूर्ण देशाचा विकास साधता येतो. गावांचा संपूर्ण विकास ही त्यांची आर्थिक विकासाची संकल्पना आदर्श असून व्यावहारिक देखील आहे. विकासाची प्रक्रिया, सातत्याने चालू राहण्यासाठी, विकासाचा दर टिकवून त्यात वाढ करण्यासाठी गावाच्या विकासाला प्राधान्य देणे गरजेचे आहे. अन्यथा अर्थव्यवस्थेसमोर अनेक संरचनात्मक अडचणी निर्माण होऊन आर्थिक अरिष्टाचा सामना करण्याची परिस्थिती देशावर ओढवते म्हणून विकास प्रक्रियेत मानवाचा विचार होणे आवश्यक आहे. आजच्या काळातही व्यक्ती व्यक्तींना जोडणारी व जगाचा विकास ख-या अर्थाने साधणारी महात्मा गांधी यांची विकासाची संकल्पना सार्थ असल्याची खात्री पटते.

मानवी मूल्ये

गांधीच्या अर्थशास्त्रात मानवी मूल्यातील बदल अपेक्षित आहे. त्यांनी पैसा आणि भौतिक संपत्तीपेक्षा नैतिक आणि मानवी मूल्यांवर अधिक भर दिला आहे. त्यांच्या मते, मानवी जीवनाचा सर्वांगाने अभ्यास केला पाहिजे. अर्थशास्त्र आणि नीतिशास्त्र यांचा संबंध महत्त्वाचा आहे असे फ्रेंच अर्थशास्त्रज्ञ सिस्मोडी यांनी सांगितले. याच विचाराला दुजोरा देऊन अर्थशास्त्र व नीतिशास्त्र यात फरक करता येणार नाही असे गांधींनी स्पष्ट केले. गांधीजीच्या मते, माणूस हा सर्वोच्च विचारवंत असून त्याचे जीवन वैशापेक्षा अधिक महत्त्वाचे आहे.

अहिंसक अर्थव्यवस्था

सत्य आणि अहिंसा परस्परांपासून अविभाज्य आहेत असे गांधीजींना वाटत होते. अहिंसा हे साधन असून सत्य हे साध्य आहे असे त्यांनी स्पष्ट केले. म्हणूनच अहिंसा हे सत्यान्वेषी मानवाचे सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य ठरते असे गांधींना वाटते. भूतलावर कोणत्याही वस्तुमानाला व प्राणिमात्राला विचाराने, शब्दाने, अथवा कृत्याने संभवणारी दुखापत टाळणे अशी अहिंसेची व्याख्या गांधींनी हरिजन मधील एका लेखात केली आहे. गांधी अहिंसेला सर्वश्रेष्ठ आत्मबल मानीत असत. विनम्रतेखेरीज अहिंसा अशक्य आहे. मात्र त्या विनम्रतेला कुणीही दौर्बल्य समजू नये. अहिंसा ही शौर्याची वरमसीमा आहे. खरी लोकशाही आणि वास्तविक मानवी विकास हा फक्त अहिंसात्मक समाजामध्येच शक्य असतो. भांडवलशाहीतील श्रमिकांची पिळवणूक नाकारून अहिंसा अभिप्रेत होती म्हणूनच गांधीजींनी भांडवलशाहीस विरोध केला.

ग्रामस्वराज्य

गांधीजींच्या अर्थशास्त्राचा ग्रामस्वराज्य आणि स्वावलंबन हा पाया होता. भारतीय खेड्याचे पुनरुज्जीवन व्हावे अशी त्यांची धारणा होती. गांधीजींना अन्न, वस्त्र, निवारा आदी सदर्भात प्रत्येक खेडे स्वयंपूर्ण व्हावीत असे अपेक्षित होते. त्यामध्ये उत्पादन, उपभोग आणि वितरण या आर्थिक क्रिया एकाचवेळी घडाल्यात, उद्योग विकेंद्रीत असावेत आणि सहकारी संघटना असाव्यात, खेड्यामध्ये कृषी संपन्नता निर्माण व्हावी, ग्रामीण भागात सुप्त बेकारी नसावी असे गांधीजींना वाटत होते. खेड्याचा विकास या तत्वावर गांधीजींचे अर्थशास्त्र अवलंबून आहे. त्यांच्या मते, खेड्यांचा विकास झाला तरच देशाचा विकास होईल. भारताच्या सर्वांगीण विकासासाठी गांधींनी ग्रामीण विकासावर भर दिला. त्यांनी ग्रामराज्य ही संकल्पना मांडली. याअंतर्गत श्रमप्रतिष्ठा, स्वयंपूर्णता, विकेंद्रीकरण, ग्रामीण व्यवसाय, शिक्षण, प्रौढ साक्षरता, सहकारी शेती, अस्पृश्यता निवारण, स्त्री उध्दार, आर्थिक समता, इ. तत्वावर भर दिला. गांधींनी आदर्श ग्रामस्वराज्याची कल्पना मांडली व आदर्श खेड्यात कोणत्या गोष्टी असाव्यात यांचा उल्लेख सुध्दा केलेला आहे तो पुढिलप्रमाणे स्पष्ट केला आहे.

१) खेड्याच्या रचनेमध्ये सुसूत्रता असावी. २) प्रत्येक खेडे आर्थिक दृष्ट्या स्वयंपूर्ण असावे. ३) प्रत्येक खेडे अन्न व वस्त्राबाबत स्वयंपूर्ण असावे. ४) प्रत्येक खेड्यातील कृषी व्यवसाय प्रगत असावा. ५) खेड्यातील जमिनीमधून अन्नधान्याचे उत्पादन घेतल्यानंतर उरलेल्या जमिनीवर नगदी पिके घ्यावीत. ६) प्रत्येक खेड्यात धर्मशाळा, शाळा, नाट्यगृहे, दवाखाना, स्वच्छ पाण्याची व्यवस्था आणि समाज मंदीर असावे. ७) प्रत्येक खेड्यात गुरासाठी गोठे, मुलांना खेळण्यासाठी मैदाने असावीत. ८) प्रत्येक खेड्यात फुलझाडे, स्वच्छ रस्ते, सांडपाण्याची व्यवस्था असावी. ९) प्रत्येक खेड्यातील जातीव्यवस्था नष्ट व्हावी. १०) प्रत्येक खेड्यात मुलभूत शिक्षण सक्तीचे असावे. ११) खेड्यातील सर्व व्यवहार सहकारी तत्वानुसार चालविले जावेत. खेड्यातील उत्पादन स्थानिक बाजार पेठेतच उपलब्ध व्हावेत. १२) गावाचा कारभार दरवर्षी निवडून आलेल्या पाच सदस्यांच्या ग्रामपंचायती मार्फत चालविला जावा. १३) ग्रामपंचायतीला कायदे करण्याचे, त्याची अमलबजावणी करण्याचे न्यायालयीन अधिकार असावेत.

वरील सर्व बाबी लक्षापूर्वक अभ्यासल्या तर गांधीजींचा आदर्श खेड्याचा विचार किती स्पष्ट होता हे आपणाला जाणवते. ग्रामीण भागात असणा-या विविध प्रकारच्या समस्या जसे, आरोग्य, दारिद्र्य, शिक्षण इ. समस्या सोडविल्या तरच ग्रामीण भागाचे, खेड्याचे पुनरुज्जीवन होईल असा विश्वास गांधीजींना वाटत होता. पुणे विद्यापीठातील डॉ. यशवंत सुमन

यांच्या गांधीजी आजच्या संदर्भात या लेखात ते म्हणतात, जग हे ग्लोबल खेडे बनले असल्याचे बोलले जाते. या बदलणा-या परिस्थितीत सामान्यातील सामान्य माणूस केदंस्थानी ठेवून त्यांच्या सर्वांगीण विकासाविषयी चिंतन महत्त्वाचे आहे. कामाच्या शोधात कामगार वर्ग खेड्यातून शहराकडे, एका राज्यातून दुस-या राज्यात आणि एका देशातून दुस-या देशात स्थलांतर करीत असल्याचे दिसते. हे सगळे नव्या उत्तर औद्योगिक भांडवलशाहीने निर्माण केलेल्या अशाश्वततेचे परिणाम आहेत. दारिद्र्य, विषमता आणि बेकारी हे प्रश्न तीव्र बनल्याचे दिसते. बाजारपेठीय अर्थकारणात पारंपारिक व्यवसाय करणा-यावर गदा येत आहे. त्यांचे नैसर्गिक साधन संपत्तीवरील हक्क काढून घेण्यात येत आहेत दुसरीकडे शहरातही असंगठित कामगार, झोपडपट्टी वासीय विस्थापित यांचे प्रश्न गंभीर बनले आहेत.

आज एका बाजूला साम्यवादी सर्वकषवाद, राज्यवाद, वंशवाद आणि अधिकारशाहीचा प्रतिवाद करण्याची लोकशाहीवादी शक्ती, गांधी विचाराची कास धरताना दिसतात. तर दुस-या बाजूस वाढता हिंसाचार, पर्यावरणाचा -ह्रास, पर्यावरणवादी आणि विकासवादी मंडळीही गांधी विचारांना समर्थन देतांना दिसतात. खरे तर मानवी कल्याणाचा विचार गांधींनी राष्ट्र राज्याच्या चौकटीत कधीच बंदिस्त केला नव्हता आणि म्हणूनच मानवी जीवनाचे नियमण, नियंत्रण करणा-या ज्या संरचना होत्या त्यातील दमन व शोषणाच्या विरोधात गांधींनी सतत लढा दिला. धर्मव्यवस्था, उत्पादन व्यवस्था, राज्यव्यवस्था, पुरुषसत्ताक व्यवस्था आणि वर्गव्यवस्था व मानवी विकासक्रमात येणा-या अन्न नियमण, नियंत्रणाच्या संरचनांमधील दमन शोषकाला अथक चिवटपणे विरोध करणे व संघर्षशील राहणे हे गांधी विचारांचे मर्म आहे. ही त्यांची मुलगामी नैतिक भूमिका होती. जागतिकीकरणाच्या संदर्भात शोषक शोषित समुह ओळखणे, त्या त्या पातळीवर संघर्ष उभा करणे, सामाजिक उपक्रम अचुकपणे ठरविणे म्हणजेच गांधीजींना नव्या संदर्भात प्रस्तुत करणे होय.

सर्वोदय योजना

गांधीजींवर जॉर्ज रस्किन यांच्या न्द जव जीम सेंज या पुस्तकाचा फार प्रभाव होता. त्यांनी सर्वोदय नावाने या पुस्तकाचे भाषांतर केले. त्याचे स्पष्ट प्रतिबिंब गांधीजींच्या सर्वोदय योजनेमध्ये पहावयास मिळते. सववि सर्वांगीण कल्याण करण्यासाठी आखलेली योजना म्हणजे सर्वोदय योजना होय. आर्थिक विकासाच्या प्रक्रियेत त्यांनी सामान्य माणसाच्या अन्न, वस्त्र, निवास, शिक्षण व वैद्यकीय मदत वा गरजा पूर्ण करण्यास अग्रक्रम दिला. प्रत्येकाला आपल्या गरजा भागविण्यासाठी समान संधी मिळाली पाहिजे.

समता प्रस्थापीत झाली पाहिजे. संपत्ती वाटपातील विषमता कमी झाली पाहिजे अशी त्यांची धारणा होती. सर्वोदयाचा अशा विश्वास आहे की, सध्याची अर्थव्यवस्था मानवी मूल्य विश्वास आणि समाजाची वागणूक यामध्ये सर्वोदयाद्वारे आमुलाग्र बदल करता येऊ शकेल असे त्यांना वाटत होते. या कल्पनेचा विकास करण्याचे श्रेय श्री. विनोबा भावे यांना जाते. त्यांनी गांधीजींच्या पश्चात सर्वोदय समाज स्थापन केला. विनोबांनी त्यातून श्रुदान, ग्रामदान सारख्या चळवळी हाती घेतल्या. सर्वोदय योजनेमध्ये आर्थिक स्वावलंबन, सत्तेचे विकेंद्रीकरण, प्रादेशिक उद्योगधंदे, कुटीर उद्योगाचा विकास, यंत्राचा कमीत कमी वापर, मोठ्या उद्योगधंद्याचे व सार्वजनिक उपयुक्ततेच्या सेवांचे राष्ट्रीयीकरण आणि या सर्वांमध्ये लोकते सहकार्य व सहभाग अपेक्षित आहे.

लघु व कुटीर उद्योग (ग्रामोद्योग) आणि विकेंद्रीकरण

औद्योगिक क्रांतीनंतर युरोपात झालेल्या औद्योगिकीकरणाला गांधींचा विरोध होता. आदर्श खेडेगाव संकल्पनेत लघु व कुटीर उद्योगांना चालना देण्याची त्यांची इच्छा होती. मोठ्या प्रमाणातील उद्योगधंदे भांडवल प्रधान आहेत. श्रमशक्तीचा तेशे पुरेपूर वापर होत नाही. भारतात श्रमशक्ती विपुल प्रमाणात उपलब्ध आहे परंतु भांडवल कमी आहे म्हणून ग्रामोद्योग व कुटीरुद्योगावर गांधींनी भर दिला आहे. त्यांच्या मते भारतीय ग्रामीण परिसरातील शेतकरी बांधवांना फावल्या वेळात करता येण्याजोगा कुटीरुद्योगाखेरीज दुसरा मार्ग नाही. या शेतकऱ्यास शेतावर चार महिने काम असते. फक्त हंगामी रोजगार प्राप्त होतो त्यातही ग्रामीण भागात छुपी बेकारी अस्तित्वात असते म्हणूनच त्यांना पूरक व साहाय्यक उद्योग हवे आहेत असे त्यांचे स्पष्ट मत होते. औद्योगिकीकरणाने व ब्रिटिश राजवटीत ग्रामीण लघु व कुटीर उद्योग रसातळाला गेले. ब्रिटिशांनी इंग्लंडमध्ये निर्माण झालेल्या औद्योगिक माल भारतात स्वस्तात विकला व भारतीय पैसा ब्रिटनमध्ये गेला. म. गांधींनी विकेंद्रित अर्थव्यवस्थेचा पुरस्कार केला. उत्पादनाचे केंद्रिकरण झाल्यास औद्योगिक शहरे वाढतात. परिणामी ग्रामीण भागातील लोक रोजगारासाठी शहरात येतात. त्यामुळे निवास व्यवस्था, आरोग्य, पाणी पुरवठा, शिक्षण या सुविधा गरजेच्या मानाने अपु-या पडतात. सी. एफ. अँड्र्यूज यांच्या मते, तातडीचा कायम आणि व्यावहारिक उपाय म्हणजे खादी ग्रामोद्योग होय. गांधींच्या मते, चरखा हे अहिंसेचे प्रतिक आहे. सुत कताईतून स्वराज्याचे स्वप्न साकार करता येते. त्यांच्या मते एक कापडगिरणीत प्रचंड प्रमाणावर कापड निर्माण करण्याऐवजी वैयक्तिक कापड उत्पादन खेडेगावाडी चरख्याद्वारे केले तर ग्रामीण जनतेला रोजगार मिळेल. यामागे लोकसंख्या अवास्तव असल्याने श्रमप्रधान उत्पादन

पध्दतीवर गांधीजीनी भर दिला. त्यांच्या मते प्राचीन काळात हस्तकला वस्तू व कापड ग्रामीण भागात तयार झाले. जागतिक बाजारात ते विकले गेले. म्हणूनच ग्रामीण भागातील लघु आणि कुटीरउद्योगांचे पुनरुज्जीवन करण्याचा गांधीजीनी पुरस्कार केला होता. ग्रामीण भागातील कुटीरउद्योग, ग्रामीण जीवनाशी व साधन सामुग्रीशी सुसंगत असावा. ग्रामीण उद्योगातून ग्रामीण स्वयंपूर्णता साधता येईल. ग्रामीण भागातील लघु आणि कुटीरउद्योग शेतीला अनुसूच्य असावा. त्यांनी खादी आणि गो-पालन यांना अग्रस्थान दिले. ग्रामीण उद्योगांना मोठ्या प्रमाणावर भांडवलाची आवश्यकता नसते. अखिल पातळीवर ग्रामीण कुटीर व लघुउद्योगांना मदत आणि मार्गदर्शन करण्यासाठी अखिल भारतीय चरखा संघ, अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ त्यांनी स्थापन केला. आपल्या ग्रामीण उद्योगांच्या विचारबाबत ते म्हणतात, खेड्यातील जोडघंटे, कुटीरोद्योग, लघुउद्योग, हस्तउद्योग यांचा विकास झाल्याशिवाय खेड्यांचा विकास होणार नाही आणि खेड्यांचा विकास झाल्याशिवाय देशाचा विकास होणार नाही. त्यासाठी त्यांनी खेड्यातील उद्योगांना महत्त्व दिले.

श्रम (बेकारी)

भारतातील वाढती लोकसंख्या विचारात घेता भारतात श्रमप्रधान उत्पादन पध्दती असावी असे गांधीजीना वाटत होते. त्यामुळे अतियांत्रिकीकरणाला गांधीजीचा विरोध होता. किंबहुना मोठे उद्योगघंटे निर्माण करून केंद्रीकरण करण्याऐवजी छोटे कुटीर उद्योग विखुरलेल्या स्वरूपात निर्माण करणे आवश्यक आहे असे त्यांना वाटत होते. अति यांत्रिकीकरणामुळे बेरोजगारी वाढेल, मनुष्याची प्रगती होत असतांना त्यांच्या गरजा वाढतील, तो बुध्दीवादी बनेल, ऐहिक सुखाची लालसा पूर्ण झाली नाही, तर त्यांच्या जीवनात ताण आणि निराशा येईल. म्हणून आवश्यक तेथेच यांत्रिकीकरण केले जावे व या उद्योगांवर शासनाची मालकी असावी त्यामुळे श्रमिकांचे शोषण होणार नाही.

विश्वस्त संकल्पना

शोषण विरहित आदर्श समाजाची निर्मिती, हे गांधीजींचे स्वप्न होते. त्यांचा आर्थिक विषमता व शोषण यांना विरोध होता, परंतु त्यांना वर्गसंघर्षाचा मार्ग मान्य नव्हता. गांधीजी अहिंसेचे उपासक होते. त्यांचा हृदय परिवर्तनाच्या मार्गावर विश्वास होता. संघर्ष व हिंसा या मार्गांनी आदर्श राज्याची स्थापना करता येणार नाही असे त्यांनी म्हटले होते. महात्मा गांधींच्या अहिंसा व हृदयपरिवर्तनाच्या मार्गावरील विश्वासातूनच त्यांनी संपत्ती विश्वस्त संकल्पना मांडली होती. त्यांनी असे प्रतिप्रादन केले की, समाजातील ज्या लोकांकडे गरजेपेक्षा जास्त संपत्ती असेल ती

त्यांच्याकडेच राहू द्यावी. परंतु या लोकांनी म्हणजे भांडवलदार, जमिनदार व श्रीमंत वर्गाच्या लोकांनी आपण आपल्या संपत्तीचे मालक आहोत असे न समजता, ही संपत्ती समाजाच्या मालकीची आहे आणि आपण त्या संपत्तीचे केवळ विश्वस्त आहोत असे समजावे. त्यांनी आपल्याकडील संपत्तीचा विनियोग समाजाच्या हितासाठी व गोरगरीब, गरजू लोकांच्या कल्याणासाठी करावा.

स्वदेशी

गांधींनी आपले विचार मांडताना स्वदेशी या संकल्पनेचा आग्रहाने पुरस्कार केला. त्यांच्यापूर्वी लोकमान्य टिळकांनी आपल्या वतुःसुत्री कार्यक्रमातून स्वदेशीचा विचार मांडला होता. स्वदेशीच्या पुरस्कार, प्रसार, स्विकार आणि स्वराज्य व राष्ट्राभिमान यामध्ये एकप्रकारची परस्पर पुरकता आहे. गांधीजींनी १९१८ मध्ये भारतीयांना स्वदेशीचे आवाहन केले आणि विदेशी आयात वस्तूवर बहिष्कार टाकण्यासंबंधी घोषणा केली. तेव्हा भारतात ६० कोटी रूपये किमतीच्या आयात कापडाची होळी देशभर करण्यात आली. त्यांच्यामते स्वदेशीचा आग्रह धरला तर स्वदेशी उद्योगांना, उद्यमशीलतेला उत्तेजन मिळेल. तसेच विदेशी वस्तूचे आणि उत्पादकांचे स्वदेशावरील आक्रमण थांबविता येईल. आपल्या देशातून बाहेर जाणारी बरीच संपत्ती देशातच वापरता येईल. परिणामी देशी उत्पादन, रोजगार, उत्पन्न, राहणीमान यात वाढ घडून येईल. त्यामुळे ब-याच समस्या सुटतील. देशातील दारिद्र्य कमी होण्यास मदत होईल.

जागतिकीकरण

गांधीजींची श्रमाची, श्रमप्रधान तंत्राची व ग्रामवादाची संकल्पना जागतिकीकरणात टिकून राहत नाही. कारण जागतिकीकरणामध्ये उत्पादन खर्च कमी करून उत्पादन दर्जा सुधारणे यावर भर दिला जातो. ग्रामस्वराज्यातील श्रमप्रधान उत्पादन व्यवस्थेत हे साध्य होणार नाही. अशा परिस्थितीत गांधीजींच्या तत्वाज्ञानातील जे विचार आज लागू पडतात त्यांचा स्वीकार करावा आणि जे विचार गैरलागू आहेत त्यांचा त्याग करावा. तसेच भारत जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेत टिकून राहू शकेल.

मुल्यमापन

गांधीजींचे विचार आदर्शवादी आहेत. त्यात ग्रामविकास, आर्थिक सत्तेचे विकेंद्रीकरण, भांडवलदारांची भूमिका, पर्यावरण, संरक्षण, सत्य, अहिंसा, समानता इत्यादींचा समावेश होतो. आज चंगळवाद संस्कृती आहे. आर्थिक, सामाजिक व राजकीय शोषण आढळते. प्रत्येकाला भौतिक सुखाची लालसा आहे. जागतिकीकरणामध्ये गळेकापू स्पर्धा निर्माण झाली आहे या अनिष्ट बाबींना पायबंद घालण्यासाठी गांधीजींचे विचार मार्गदर्शक ठरणार

आहेत. गांधीजीचे विचार हे भारतीय अर्थव्यवस्थेला धरून होते त्यांनी अनियंत्रित भांडवलशाहीतील नफेखोरी, संपत्तीसंचय, आर्थिक शोषण अशा सर्व अतिरेकी वैशिष्ट्यांना गांधीजींनी विरोध केला होता. परिणामी पाश्चिमात्य देशातील आर्थिक संकटासारख्या धोक्यापासून भारत सावध राहू शकतो. तथापि त्यामध्ये त्यांचे दूरदर्शित्व होते. ग्रामोद्योगावर त्यांनी ग्रामीण भागातील बेकारी नष्ट करण्यासाठी भर दिला होता. समाजातील आर्थिक विपत्तीवस्था आणि सामाजिकदृष्ट्या उपेक्षित वर्गाविषयी, त्यांच्या उत्कर्षाविषयी गांधीजींची तळमळ त्यांच्या विचारसरणीत आढळते. गांधीजींनी आर्थिक आदर्शवादाचा उपयोग केला. स्वदेशी वस्तूंचा वापर आणि विदेशी वस्तूंचा बहिष्कार हे सूत्र गांधीजींनी भारतीयांना आत्मसात करावयास सांगितले. साम्राज्यशाहीचे आर्थिक खच्चीकरण करण्यासाठी व स्वदेशी उद्योगांचे संरक्षण करण्यासाठी स्वदेशी विचार उपयुक्त ठरला आहे. गांधीजींनी साधी राहणी, उच्च विचार व किमान गरजा यांवर भर दिला. गांधीजींच्या विचारसरणीचा जगातील नामवंत विचारवंतांनी गौरव केला. मात्र भारतीयांनी गांधीवादाचा पूर्वतः स्वीकार केला नाही. आजच्या बदललेल्या आर्थिक स्थितीत गांधीजींचे विचार व्यावहारिकदृष्ट्या विसंगत ठरतात. जलद आर्थिक व औद्योगिक प्रगतीसाठी ग्रामोद्योग, विशेषतः सूतकटाई उपयोगी पडत नाही. टिकाकारांच्या मते भारताची प्रगती केवळ शेती व लघुउद्योगावर होणार नाही त्यासाठी मूलभूत व अवजड उद्योगधंदे विकसित केले पाहिजेत. प्रा. अंजलि यांच्या मते गांधीवाद हा समाजातील विकेंद्रित जीवनाची साधी कल्पना व अत्याधुनिक तंत्रज्ञान आणि विज्ञान यांना असणारी मागणी यांचा समावेश आहे. आजच्या डिजिटल युगात भारतासारख्या राष्ट्राला गांधींचे आर्थिक विचार आजही उपयुक्त आहे.



महात्मा गांधी

जीवन, कार्य एवं विचार



संपादक
डॉ. सूर्यकांत कापशीकर

| | | |
|----|---|-----|
| 17 | महात्मा गांधीजी की बालाघाट जिले में यात्रा डॉ. आशा गोहे | 124 |
| 18 | महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन प्रा. डॉ. शहनाज शेख | 129 |
| 19 | महात्मा गांधीजी एवं स्वराज प्रा. डॉ. रफिक शेख | 134 |
| 20 | भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में गांधीजी का योगदान डॉ. सरोज एस. मोडेश्वर | 139 |
| 21 | महात्मा गांधी के सामाजिक विचार डॉ. विमला मराठी | 146 |
| 22 | महात्मा गांधी के आर्थिक और शैक्षिक विचार प्रो. अंजु शरण | 149 |
| 23 | महात्मा गांधी का किसान आन्दोलन में योगदान डॉ. रविंद्र लोणारे | 157 |
| 24 | महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन प्रो. विंदिया महोबिया | 163 |
| 25 | महात्मा गांधी एवम् अहिंसा प्रा. वाय. एस. राजपूत | 167 |
| 26 | महात्मा गांधीजीके सामाजिक और आर्थिक विचार प्राकटरे. महेंद्रकुमार डी.डॉ. | 171 |
| 27 | गांधीजी के सामाजिक एवं राजनीतिक विचार तथा कार्य प्रा. अल्पना वैद्य | 177 |
| 28 | गांधीजी के आर्थिक विचारों की वर्तमान सार्थकता डॉ. श्रद्धा एस. गावंडे | 180 |
| 29 | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता डॉ. सु. आशीष तिवारी | 187 |
| 30 | आम-जन और महात्मा गांधीजी डॉ. गायत्री मराठी | 193 |
| 31 | महात्मा गांधी का भाषायी चिन्तन एवं व्यवहार डॉ. पुरंदर दास | 199 |
| 32 | वर्तमान में गांधी दर्शन की प्रासंगिकता डॉ. सविता सोनी | 209 |
| 33 | गांधीवादी सत्याग्रही सुभद्राकुमारी चव्हाण डॉ. बन्सी मरुते | 216 |
| 34 | महात्मा गांधी व सेनापती बापट यांचे सत्याग्रहाचे तंत्र व कार्य डॉ. सौ. ज्योती वसंत खडसे | 223 |
| 35 | अस्पृश्यांच्या दृष्टीने म. गांधी- ग. म. ठवरे पत्रव्यवहाराचे महत्त्व डॉ. आनंद बी. गणवीर | 228 |
| 36 | महात्मा गांधीजीचे शैक्षणिक विचार प्रा. डॉ. सुवराज शामरावजी माहुरे | 233 |
| 37 | महात्मा गांधीजी यांचे आरोग्य पर्यावरणविषयक विचार आणि कार्य | 239 |

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. रेनु आशीष तिवारी उपप्राचार्या एवं विभाग प्रमुख, अर्थशास्त्र सेठ
केसरीमल पोखवाल महाविद्यालय, कामठी

महात्मा गांधी का सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्रता आंदोलन के साथसाथ देश में आर्थिक आत्मनिर्भरता की संकल्पना भी गांधीजी की ही देन है। इन्होंने आर्थिक नियमों को नैतिकता से जोड़ा और विकेन्द्रीकरण की नीति अपनाकर गाँवों को विकास का मार्ग दिखलाया। आर्थिक स्वतंत्रता को निचले स्तर से अर्थात् गाँवों से शुरु करना इनका स्वप्न था। इसलिए ग्राम, सर्वोदय, स्वदेशी एवं खादी को इन्होंने बढ़ावा दिया। श्रमप्रधान तकनीक अपनाकर बेरोजगारी जैसे आर्थिक मुद्दों का समाधान इनके द्वारा दिया गया। मशीनीकरण के विरुद्ध श्रमप्रधान तकनीक को बढ़ावा देकर चरखे पर सूत कातने जैसे कार्यों पर सामान्य जन का ध्यान केन्द्रित करवाया। लघु एवं कुटिर उद्योग जो ग्रामीण क्षेत्रों की आत्मा है, इसको महत्व प्रदान किया। वैश्वीकरण एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों से निपटने के लिए स्वदेशी एवं ग्रामीण उद्योगों को अपनाने की गांधीजी की संकल्पना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत ही अधिक प्रासंगिक है। आर्थिक विकास का आधार नैतिकता होना चाहिए यह बताकर इन्होंने देश को भ्रष्टाचार व कालेधन जैसी विसंगतियों से निपटने की राह दिखलाई है। अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान की संज्ञा दी गई है। अर्थशास्त्र के अंतर्गत मानव व्यवहार का आर्थिक अध्ययन किया जाता है महात्मा गांधी का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर योगदान अतुलनिय है। हालांकि गांधीजी एक पेशेवर अर्थशास्त्री नहीं थे, बिलकुल उस प्रकार जैसे अर्थशास्त्र के पिता कहे जाने वाले एडम स्मिथ भी एक पेशेवर अर्थशास्त्री नहीं थे। जब गांधीजी ने स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में हिस्सा लिया और विश्व के पटल पर भारत का परिचय करवाया। अनेकों भारतियों ने इस संग्राम में हिस्सा लिया और इस आंदोलन को मजबूती प्रदान करने के लिए गांधी जी के आर्थिक विचारों का सहारा लिया गया। जिसमें इन्होंने अनेकों तत्कालीन व्यवसायियों एवं स्वतंत्रता



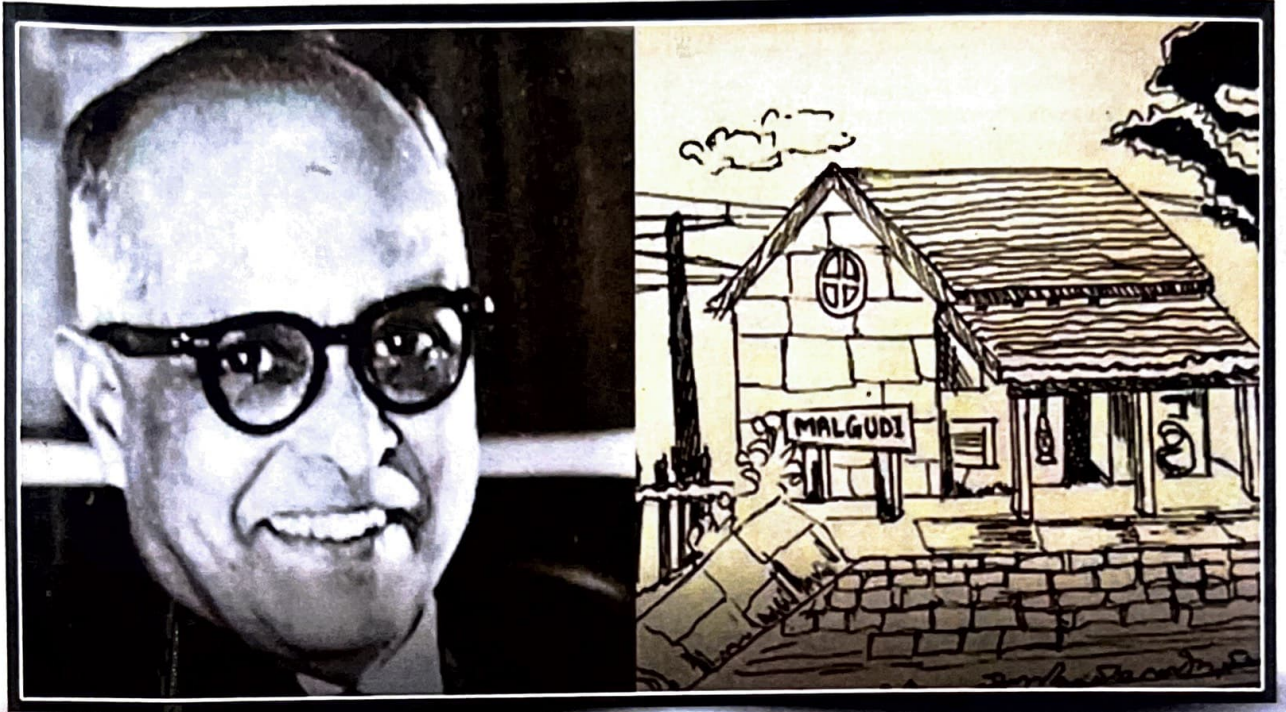
डॉ. सूर्यकांत कापशीकर

इतिहास विभागप्रमुख

यशोदा गर्ल्स आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज,
स्नेहनगर, नागपूर

- महाराष्ट्रातील नामांकित शासकीय विदर्भ ज्ञान-विज्ञान संस्था अमरावती येथुन इतिहासाची पदव्युत्तर पदवी प्राप्त
- इ. स. २००५ मध्ये विद्यापीठ अनुदान आयोग, न्यु दिल्लीची राष्ट्रीय पात्रता परिक्षा उत्तीर्ण
- इ. स. २००७ पासुन यशोदा गर्ल्स आर्ट्स अँड कॉमर्स कॉलेज, नागपूर येथे इतिहास विभाग प्रमुख म्हणुन कार्यरत
- अनेक आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय चर्चासत्रे, परीषदामध्ये शोध निबंध प्रकाशित
- अनेक आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय चर्चासत्रे परीषद व कार्यशाळामध्ये सक्रिय सहभाग
- इ. स. २०१६ मध्ये राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विद्यापीठ, नागपूर मधुन 'महारेत्तरांचे आंबेडकरी चळवळीतील कार्य (१९२०ते १९५६) एक ऐतिहासीक मूल्यमापन' या विषयावर इतिहासाची आचार्य पदवी प्राप्त
- इंडियन कौन्सिल ऑफ सोशल सायन्स रिसर्च, नवी दिल्ली (आय. सी. एस. एस. आर.) अंतर्गत 'नागपूर शहराचे आंबेडकरी चळवळीमध्ये योगदान (१९२०ते १९५६)' या विषयावर Minor Research Project पूर्ण
- इतिहास विषयाची पाठ्यपुस्तके आणि संदर्भग्रंथ प्रकाशित
- आकाशवाणी आणि दुरदर्शन वरील कार्यक्रमात सहभाग.

Aesthetics of Humour in the Novels of R. K. Narayan



● Manish Chakravarty



Aesthetics of Humour in the Novels of R. K. Narayan

© **Manish Chakravarty**

❖ **Publisher :**

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ **Printed by :**

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
www.vidyawarta.com

❖ **Page design & Cover :**

Shaikh Jahuroddin,Parli-V

❖ **Edition: August 2019**

ISBN 978-93-90284-30-6

❖ **Price : 249/-**



All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced, or transmitted, in any form or by any means, electronic mechanical, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed, conclusions reached and plagiarism, if any, in this volume is entirely that of the Author. The Publisher bears no responsibility for them, whatsoever Disputes, if any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

Chapter – 1

INTRODUCTION

R.K. Narayan appeared on the literary firmament in the thirties of the last century. Amidst the troubled times he wielded his pen like a magic wand, creating an enchanting fictional world inhabited with human and animal beings of flesh-and-blood reality. In a writing career spanning seven decades, he enchanted and mesmerized millions of readers with his deftly etched characters, his uniquely stylized language, gentle humour, and themes, at once Indian and universal. He consciously avoided being overtly political or ideological. He is noted for his gift of a wry, subtle humour, which he suitably uses to expose the foibles of men and women. As a consummate story teller and a meticulous observer of the ironies of human life, he vividly paints the different shades of life. To Malgudi, the town of his rich imagination, he gave “a name and local inhabitation.” He has created in a little over sixty years of creative writing a veritable

भारतीय शासन एवं राजनीति

INDIAN GOVERNMENT AND POLITICS

डॉ. संजीव सी. शिरपुरकर



लेखक के बारे में



डॉ. सतीश सिंह शिरपुरकर ने एम.ए.—राजनीति विज्ञान (गोल्ड मेडल), पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। ग्राम लोक कंसर्वामल पारिवार कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भागपुर, (महाराष्ट्र) में राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। डॉ. शिरपुरकर ने कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सेमिनारों एवं कार्यशालाओं में भाग लिया है।

संविधान के बारे में

किसी भी देश की संवैधानिक व्यवस्था का विश्लेषण करने के पूर्व यह ज्ञत करना बहुत जरूरी है कि संविधान का आशय क्या है? संविधान को अंग्रेजी में Constitution कहते हैं जिसका अर्थ होता है — 'अस्थिरपण या ठोस', जो महत्व प्राप्त वीय शरीर में अस्थिमज्जर या ठोस का होता है वही भारतीय संविधान में संविधान का होता है। शासन का स्वरूप चाहे राजतंत्रात्मक, कुलीनसंवात्मक या लोकतंत्रात्मक क्यों न हो — आवश्यक रूप से प्रत्येक राष्ट्र का अपना संविधान होता है, जो इसके ने ही कहा है कि — 'संविधान के बिना राज्य एक अज्ञाना नाम मात्र का है'। संविधान के अभाव में राज्य, राज्य के होकर प्रजा प्रणाली का स्वरूप लेता है। संविधान ही देश की शासन व्यवस्था के संचालन का आधार होता है जिसके माध्यम से हमें सरकार को संचालित करने का भलीभांति ज्ञान प्राप्त होता है।

संविधान के अंग

- इकाई 1 — भारतीय संविधान
- प्रस्तावना : प्रकृति, संविधान की उद्देश्य पत्रिका
- भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएं
- संसदीय प्रणाली : संसदीय अधिकार एवं राज्य नीति के सिद्धांत
- संसदीय प्रणाली के अर्थ, प्रकार, प्रतिबन्ध
- राजतंत्रात्मक निदेशक तत्व : प्रकृति, महत्व
- संसदीय प्रणाली : संसद व प्रधानमंत्री
- राजतंत्रात्मक शक्तियाँ एवं कार्य
- संसदीय प्रणाली : संसद की रचना, शक्तियाँ एवं कार्य

- प्रधानमंत्री — शक्तियाँ एवं कार्य
- इकाई 4 — सर्वोच्च न्यायालय एवं भारतीय संविधान में राजनीति के मुख्य मुद्दे
- सर्वोच्च न्यायालय : रचना, शक्तियाँ एवं क्षेत्राधिकार (प्रारंभिक, अन्तिम, परामर्शदात्री)। राज्यपाल के कार्य
- भारतीय राजनीति में लोकतंत्रात्मक धर्म एवं आतंकवाद
- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची



SATYAM PUBLISHERS & DISTRIBUTORS

4, Gyan Vihar, Iskon Road, Khejdo ka Bas, Mansarovar, Jaipur - 302020 (Re.)
 M. : 093513 31053, 070620 50596
 email : satyampub@gmail.com

Sole Distributor - Cambridge Book House, Jaipur

Contact : 07734027247

Rs. 1795/-

ISBN 978-93-87760-50-9



9 789387 760509

WWW.JETIR.ORG

editor@jetir.org

An International Open Access Journal
UGC and ISSN Approved | ISSN: 2349-5162

**INTERNATIONAL JOURNAL
OF EMERGING TECHNOLOGIES
AND INNOVATIVE RESEARCH**

JETIR.ORG

**INTERNATIONAL JOURNAL OF EMERGING
TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH**

International Peer Reviewed, Open Access Journal
ISSN: 2349-5162 | Impact Factor: 5.87

UGC and ISSN Approved Journals.

Website: www.jetir.org



Website: www.jetir.org

JETIR



The increasing trend of criminalization in Indian politics and the future of Indian democracy (With special reference to 2019 lok sabha elections)

Sanjeev C Shirpurkar

HOD, Department of Political-Science S.K. Porwal College of Arts and Science and Comm, Kamptee, Dist-Nagpur,
Maharashtra, India

Abstract

The issue of Criminalization of Politics has remained the most important and sensitive issue of Indian politics. Since the recommendations of the Bohra committee set up to investigate the 1993 Mumbai bombing. Proposal passed in various sessions of parliament. Tears created by political parties over a worsening environment, the restrictions imposed by the Election Commission, expressed deep concern over the increasing trend of criminalization by the Heads of state, irrespective of the awareness created by the media from time to time in this regard, the irony is that at the level of sufficiency in our politics and governance, the nexus of crime and politics is getting stronger day by day like the addition of Fevicol. Sometimes it seems as the entire governance system has also been hijacked by the criminal syndicate. The intelligentsia is also now beginning to realize that the money power, muscle power and state force, triangular form are bent on making politics and administration more relevant by running parallel government. Currently almost all the states of India suffer from this infectious disease of criminalization. Excessive expenditure on elections, indifference of Governments, border lines drawn by Election Commission, indifference to potential malaise among politicians, constant rage of moral values, difference between statement and action of political parties, political patronage to criminals, creating a network of muscle power through money power, the political ambitions of criminal elements and the politics of caste votes are all such facts which are attracting politicians towards crime and criminals towards politics. In such a situation, if the condition and direction of the politics of development is to be maintained properly, the democratic character has to be kept pure, the dignity of the legislative institutions is to keep pure and alive than the Judiciary and Election Commission of our country will have to be enlightened by the Government and political parties, administration and bureaucrats, media and intellectual class. We have to understand our obligations and will have to continuously strive in this direction by reconstructing values seriously and actively. Other-wise, in the coming days, it will be very difficult to distinguish between the political workers and the crime worker, and instead of criminalization of politics, politics of criminal will have to be discussed and worried.

Keywords: politics of crime, moral values, money and muscle power, judicial judgement, purity of democracy, electoral boundary lines

Introduction

Indian Democracy, politics and governance have been suffering from the cancer of criminalization of politics for the last 3 decades. This issue has become a central issue of Indian politics. Currently, after the General Election results announced by the Election Commission and on the basis of affidavits submitted by various candidates to the election commission, the representatives elected to Parliament and Legislative Assembly are being analyzed by the media based on criminal background. There was a lot of discussion on this issue in the special session of Parliament convened on the occasion of the Golden Jubilee of Independence. Many MPs expressed deep concern about this crisis in their profession. In this special session, a resolution was also passed to stop criminalization of politics and it was also decided to get politics out of the quagmire of criminalization. Then it seemed as if the knot between the two different worlds of politics and crime would break. When the Election Commission urged political parties not to erase Law-breakers on the Law-making chair, the public breathed a sigh of relief. The Supreme Court has also given strict guidelines to political parties, the Election Commission and Governments to discourage the

criminalization of politics. But despite all these efforts, the fact is that the presence of such elected candidates in the highest elected body of the country is increasing day by day. Sadly, it is a matter of surprise and concern that the criminals and the mafia managers have deep penetration in that administration. The administration which is actually expected to chase and hunt these elements. Until a few year ago, this trend was limited to only a few states. But today, in almost all states, from Panchayat to Lok-Sabha, the number and representation of history sheeter candidates in all elections is increasing from election by election. Until two decades ago we used to think that politics can be made crime free, if we try. But today with despair we have to say that to some extent crime has become politics and criminal is the politician.

Objectives of Research Paper

The research paper had a curiosity to analyze the criminal background of elected MPs from the beginning of the last decade of the 20th century to the present Lok Sabha. But in view of the prevalence of the subject, an attempt has been made to limit the study to the present Lok Sabha. Through this research paper, it has also been tried to know why the

2018-2019

Dr Rashmi Jachak (Botany)

(1 Journal Article , 1 book and 1 Chapter in Book)



COPPER TOLERANT STRAIN OF AZOTOBACTER CHROOCOCCUM

Dr Rashmi Jachak

Assistant professor, Dept. of Botany, S. K. Porwal College, Kamptee 440001 Dist.

Nagpur (M.S) India

Email- drrajachak@gmail.com

ABSTRACT

Copper is one of the few metallic elements to occur in nature and an importance lies in the participation of number of biochemical reactions in plants life. Copper is used in agricultural processes. Microorganisms develop more resistance to heavy metals and adapt particular condition containing toxic metal in their media. Among metals copper and zinc are considered to be essential for the growth and yield of crop plants. Each of the metal has one or more specific functions and growth is determined by the presence of an optimum concentration of these metals in the growth media. Bacteria are most dominant group of microorganisms in soil and probably equal one half of the microbial biomass in soil. In present study we developed the copper strain of *Azotobacter chroococcum* in Jensen's medium. An inhibitory level of organism to Cu was determined by selecting the range of 0.01 - 10 mg^l⁻¹. The metal resistant strain of *Azotobacter* was obtained by repeated subculturing. The inhibitory level 0.08 mg^l⁻¹ of copper metal for *Azotobacter*. The tolerance index (TIC) of bacteria increased to 0.1 to 0.5 mg^l⁻¹ in about 35 generations. TIC of tolerant strain was obtained at Cu-t 0.36 for *Azotobacter chroococcum*.

Keywords: *Azotobacter chroococcum*, Copper, metal

1 Introduction

The fixation of atmospheric nitrogen by free living microorganisms as distinguished by fixation in association with another host system is known as non-symbiotic nitrogen fixation. The aerobic bacteria capable of fixing nitrogen come under genera *Azotobacter*, *Azomonas*,

Beijerinckia, *Derxia*, *Mycobacterium* and *Azospirillum* (Becking, 1981). Among these bacteria, many are heterotrophic and depend on energy derived from the degradation of plant residues. The lack of organic matter in soil is a limiting factor in the proliferation of *Azotobacter in soil*. Soil microbiological problems related to the rhizosphere attracted the attention of several workers in India. The occurrence of *Azotobacter* in soil types of India. Many workers believe that increased respiration by *Azotobacter* excludes oxygen from nitrogens which may serve as natural tool to scavenge oxygen from the site of nitrogen fixation (Dalton and Postgate, 1969 and Postgate, 1971, 1974)

2 Materials and methods

2.1 Collection and isolation of *Azotobacter* from soil

The *Azotobacter* collected from rhizosphere of plants from 10 cm - 30 cm depth of soil of the experimental field of Nagpur District. Isolation was done by serial dilution technique in Jensen's medium. Plates were incubated for 3-4 days.

2.2 Estimation of growth

The growth of both bacteria was monitored in measuring optical density at 660 nm for bacteria by using UV spectrophotometer, model CL-54D.

2.3 Preparation of stock solutions for heavy metals and determination of inhibitory level

The stock solutions of metals were prepared by adding 3.928 g of CuSO₄ . 5H₂O, in 100 ml distilled water separately. The metal solution was diluted to various concentrations in the range of 0.01 - 10 mg^l⁻¹ in determining the inhibitory level of each metal. An inhibitory level of organism to Cu was determined by

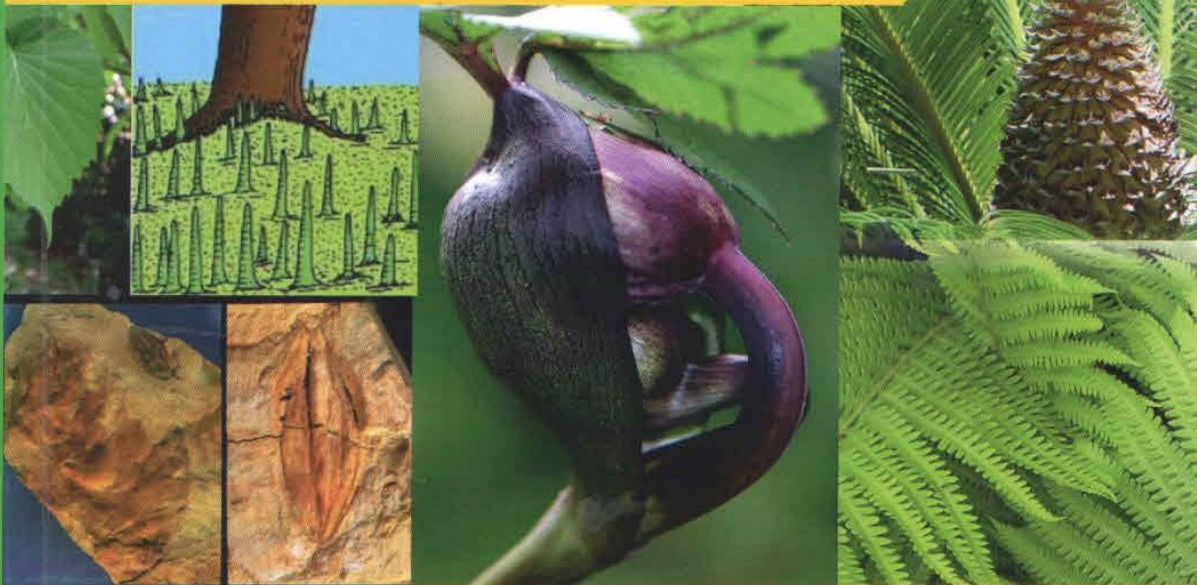
B. Sc. Semester - 2

BScGuru

BOTANY

Paper - 1 : Pteridophyta and Gymnosperms

Paper - 2 : Palaeobotany & Morphology of Angiosperms



Dr. Sumedha Puranik | Maya Jadhav | Dr. Rashmi Jachak | Dr. Aparna Yadav



CENTRAL TECHNO PUBLICATIONS



A TEXT BOOK OF PALEOBOTANY AND MORPHOLOGY OF ANGIOSPERMS

For B.Sc. 2nd Semester, Paper - 2

As per new syllabus of
Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University, Nagpur

Dr. Rashmi A. Jachak

M.Sc, B.Ed, Ph.D.

Asst. Professor Dept. of Botany
Seth Kesarimal Porwal College,
Kamptee, Nagpur

**CENTRAL TECHNO PUBLICATIONS
NAGPUR**

With Best Compliments From
Prof. Dr. J. S. Chavan
SPECIMEN COPY
Date: / /



BOTANY
Paper 2 : Palaeobotany & Morphology of Angiosperms
Paper 1 : Pteridophytes & Gymnosperms
For B.Sc. - 2nd Semester - Paper 1 & 2

Exclusive Rights By Central Techno Publication, Nagpur.
For Manufacture and Marketing this and subsequent editions.

ISBN 978-81-89178-28-4

© **All Rights Reserved** : No part of this publication may be reproduced or distributed in any form or by means of stored in a data base of retrieval system without the prior written permission of the author.

Published By :

CENTRAL TECHNO PUBLICATIONS
23, "Shri. Shantadurga Niwas",
Central Bazar Road, New Ramdaspeth,
NAGPUR - 440010 (MS).
Ph. : 0 - 7798656611
Fax. : (0712) 2555213.
Email : info@centraltechno.com
www.CentralTechno.com

About the Author.....



Dr. Rashmi Ajiet Jachak (M.Sc; B.Ed., Ph.D.) is a gold medalist at graduation (1995) while she stood second in order of merit at her Post Graduation (1997) from RTMNU, Nagpur. She had total teaching experience of over 15 years - both UG and PG level. She has worked in various esteemed institutions- Hislop College, Dr. Ambedkar College and G.S. College of Commerce and Economics, Nagpur to name a few.

She has been working as Assistant Professor of Botany in Seth Kesarimal Porwal College, Kamptee, Dist. Nagpur since the academic session 2010-11. She has published and presented more than 15 research papers in National and International Journals and Conferences. Besides being an approved Ph.D. supervisor in RTMNU, Nagpur, she is a member of Review Team of Golden Research Thoughts (ISSN 2231-5063) which is an International Journal with impact factor 0.6

CENTRAL TECHNO
PUBLICATIONS
2120/-

CENTRAL TECHNO PUBLICATIONS

23 Farmland, New Ramdaspath,
Central Bazar Road, Nagpur - 440010 (MS).
Phone: 7798656611
Email: info@centraltechno.com



As Per Semester Pattern Syllabus Of
R.T.M. Nagpur University, Nagpur

Text Book of Botany

ANGIOSPERM TAXONOMY

B. Sc. Semester - III Paper - I



Dr. S. V. Kulkarni
Dr. V. Y. Charjan

Dr. J. S. Thaware
Dr. R. A. Jachak

As per Syllabus of R.T.M. Nagpur University

Text Book of Botany

ANGIOSPERM TAXONOMY

B.Sc. Semester - III
(Paper I)



Dr. Sulbha V. Kulkarni
M.Sc., M.Phil. Ph.D.,
Associate Professor & H.O.D.
Department of Botany,
Sevadal Mahila Mahavidyalaya,
Nagpur

Dr. Jayshree S. Thaware
M.Sc., B.Ed., Ph.D.,
Assistant Professor
Department of Botany,
Seth Kesrimal Porwal College,
Nagpur

Dr. V.Y. Charjan
M.Sc., Ph.D.,
Assistant Professor & H.O.D.
Department of Botany,
Kamala Nehru Mahavidyalaya,
Nagpur

Dr. Rashmi A. Jachak
M.Sc., B.Ed., Ph.D.,
Assistant Professor
Department of Botany,
Seth Kesrimal Porwal College,
Nagpur

1st Edition : July - 2017

© ALL RIGHT RESERVED

No part of this shall be reproduced, reprinted or translated for any purpose whatsoever without prior permission of the publisher in writing.



ISBN- 978-93-82683-17-9

Rs. 120/-

M/s. RAJNI PRAKASHAN

Plot No. 69, Bajrang Nagar, Manewada Road, Nagpur- 440 027

Mob. : 9890447994, 7304902027

E-mail: rajniprakashan@gmail.com

ABOUT THE AUTHORS



Dr. Mrs. S. V. Kulkarni (M. Sc., M. Phil., Ph.D., B.A.), Vedang Jyotishya & Shastri. Working as Associate Professor & Head of in Department of Botany, Sevadal Mahila Mahavidyalaya Nagpur. She has vast teaching experience. She has attended many National, International Conferences, workshops and published many papers in National & International Journals. She has completed major & minor project funded by University Grants Commission. She is a fellow of Vishwashanti Multipurpose Society & life members of Vishwashanti Multipurpose Society, IWSA and NUBTA



Dr. (Mrs.) J. S. Thaware (M.Sc., B.Ed., Ph.D.), is a presently an Assistant Professor and Head Department of Botany, Seth Kesarimal Porwal College of Arts, Science and Commerce, Kamptee. She has 10 years experience of teaching and 18 papers are published in various National and International Journals of repute. She attended and presented number of papers in various National & International Conferences & symposia. She was the Principal Investigator of UGC's MRP also.



Dr. R. A. Jachak (M.Sc., B.Ed., Ph.D.) is a gold medalist at graduation (1995) while she stood second in order of merit at her Post Graduation (1997) from RTMNU, Nagpur. She had total teaching experience of over 17 years-both UG and PG level. She has been working as Assistant Professor of Botany in Seth Kesarimal Porwal College of Arts, Science and Commerce, Kamptee, Dist.-Nagpur. She has published and presented more than 15 research papers in National and International Journals and Conferences. Besides being an approved Ph.D. Supervisor in RTMNU, Nagpur. She is a member of Review Team of Golden Research Thoughts (ISSN 2231-5063) which is an International Journal. She is also a author of Book "Palaeobotany and Morphology of Angiosperms" for B.Sc. Sem. II students.



Dr. V. Y. Charjan (M.Sc., Ph.D.) Working as Asst. Prof. & Head of the Department in Botany, Kamla Nehru Mahavidyalaya, Nagpur. She has vast teaching experience. She has attended many Conferences, Seminar, Workshops & published many papers in National & International Journals.

ISBN NO- 978-93-82683-17-9

M/s. Rajni Prakashan & Books Distributor

69, Bajrang Nagar, Manewada Road, Nagpur-440027.

M.: 9890447994, 7304902027

E-mail : rajniprakashan@gmail.com

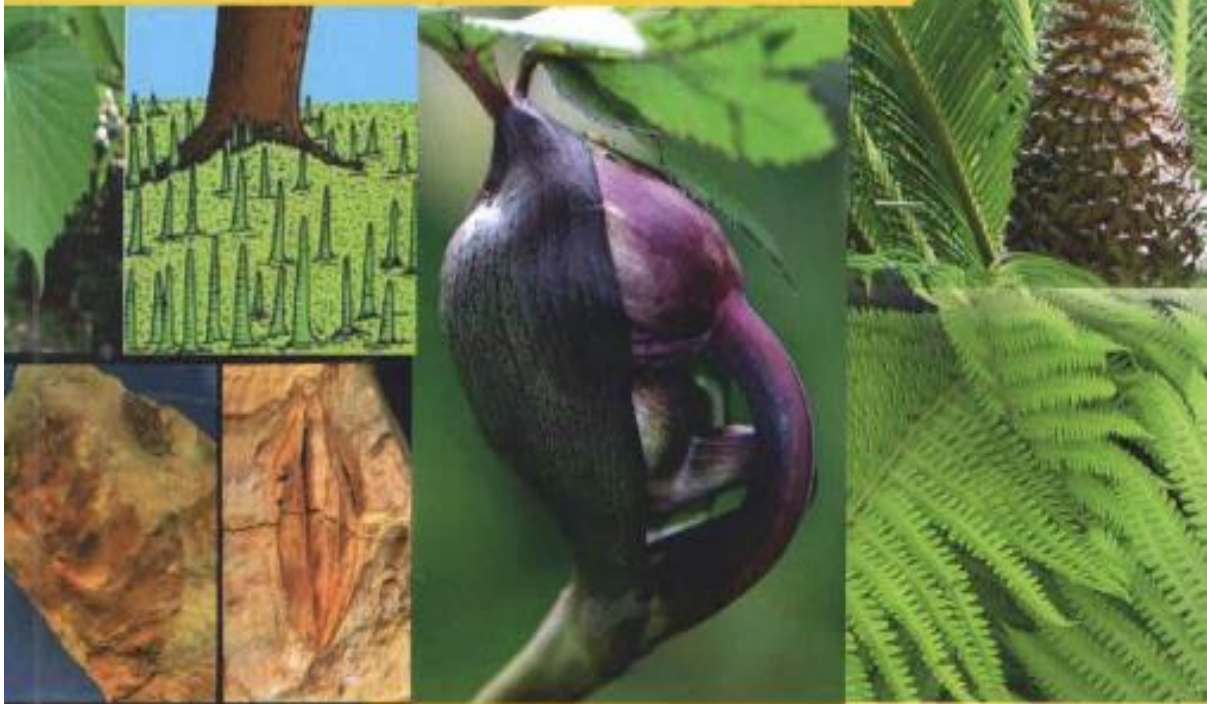
B. Sc. Semester - 2

BScGuru

BOTANY

Paper - 1 : Pteridophyta and Gymnosperms

Paper - 2 : Palaeobotany & Morphology of Angiosperms



Dr. Sumedha Puranik | Maya Jadhav | Dr. Rashmi Jachak | Dr. Aparna Yadav



CENTRAL TECHNO PUBLICATIONS



A TEXT BOOK OF PALEOBOTANY AND MORPHOLOGY OF ANGIOSPERMS

For B.Sc. 2nd Semester, Paper - 2

As per new syllabus of
Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University, Nagpur

Dr. Rashmi A. Jachak

M.Sc, B.Ed, Ph.D.

Asst. Professor Dept. of Botany
Seth Kesarimal Porwal College,
Kamptee, Nagpur

**CENTRAL TECHNO PUBLICATIONS
NAGPUR**

Specimen Copy



BOTANY

Paper 1 : Pteridophyta & Gymnosperms
Paper 2 : Palaeobotany & Morphology of Angiosperms
For B.Sc. - 2nd Semester - Paper 1 & 2

Exclusive Rights By Central Techno Publication, Nagpur.
For Manufacture and Marketing this and subsequent editions.

ISBN 978-81-89178-28-4

© **All Rights Reserved** ; No part of this publication may be reproduced or distributed in any form or by means of stored in a data base of retrieval system without the prior written permission of the author.

Published By :

CENTRAL TECHNO PUBLICATIONS

23, "Shri. Shantadurga Niwas",
Central Bazar Road, New Ramdaspath,
NAGPUR - 440010 (MS).
Ph. : 0 - 7798656611
Fax : (0712) 2555213.
Email : info@centra techno.com
www.CentraTechno.com

About the Author



Dr. Rashmi Ajiet Jachak (M.Sc; B.Ed., Ph.D.) is a gold medalist at graduation (1995) while she stood second in order of merit at her Post Graduation (1997) from RTMNU, Nagpur. She had total teaching experience of over 15 years - both UG and PG level. She has worked in various esteemed institutions- Hislop College, Dr. Ambedkar College and G.S. College of Commerce and Economics, Nagpur to name a few.

She has been working as Assistant Professor of Botany in Seth Kesarimal Porwal College, Kamptee, Dist. Nagpur since the academic session 2010-11. She has published and presented more than 15 research papers in National and International Journals and Conferences. Besides being an approved Ph.D. supervisor in RTMNU, Nagpur, she is a member of Review Team of Golden Research Thoughts (ISSN 2231-5063) which is an International Journal with impact factor 0.6

CENTRAL TECHNO
PUBLICATIONS
2120/-

CENTRAL TECHNO PUBLICATIONS

23 Farmland, New Ramdaspath,
Central Bazar Road, Nagpur - 440010 (MS).
Phone: 7798656611
Email: info@centraltechno.com

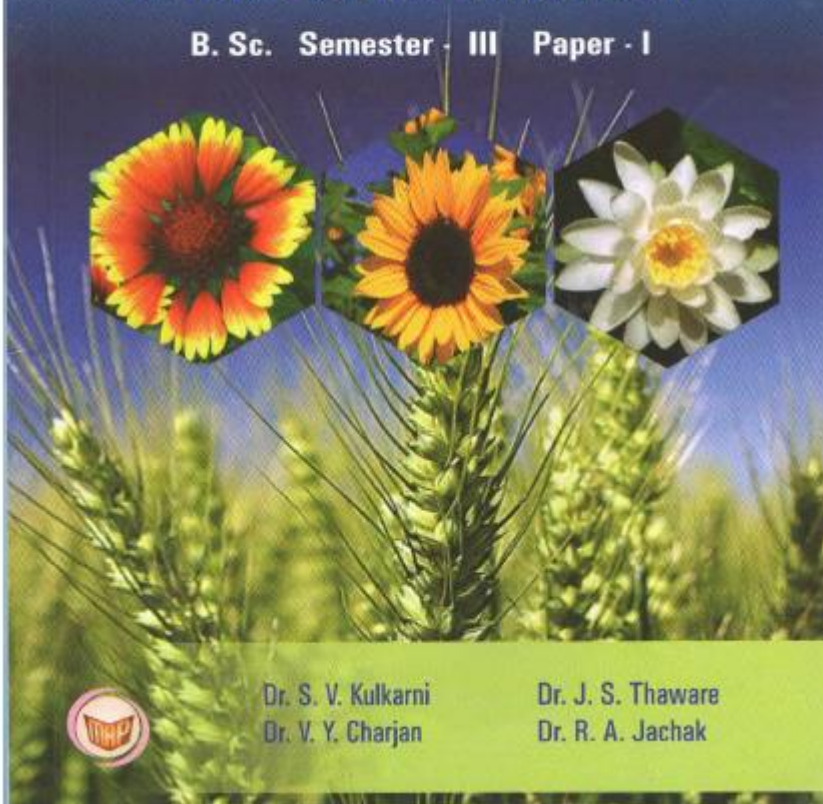


As Per Semester Pattern Syllabus Of
R.T.M. Nagpur University, Nagpur

Text Book of Botany

ANGIOSPERM TAXONOMY

B. Sc. Semester - III Paper - I



Dr. S. V. Kulkarni
Dr. V. Y. Charjan

Dr. J. S. Thaware
Dr. R. A. Jachak

As per Syllabus of R.T.M. Nagpur University

Text Book of Botany

ANGIOSPERM TAXONOMY

B.Sc. Semester - III
(Paper I)



Dr. Sulbha V. Kulkarni
M.Sc., M.Phil. Ph.D.,
Associate Professor & H.O.D.
Department of Botany,
Sevadal Mahila Mahavidyalaya,
Nagpur

Dr. Jayshree S. Thaware
M.Sc., B.Ed., Ph.D.,
Assistant Professor
Department of Botany,
Seth Kesrimal Porwal College,
Nagpur

Dr. V.Y. Charjan
M.Sc., Ph.D.,
Assistant Professor & H.O.D.
Department of Botany,
Kamala Nehru Mahavidyalaya,
Nagpur

Dr. Rashmi A. Jachak
M.Sc., B.Ed., Ph.D.,
Assistant Professor
Department of Botany,
Seth Kesrimal Porwal College,
Nagpur

1st Edition : July - 2017

© ALL RIGHT RESERVED

No part of this shall be reproduced, reprinted or translated for any purpose whatsoever without prior permission of the publisher in writing.



ISBN- 978-93-82683-17-9

Rs. 120/-

M/s. RAJNI PRAKASHAN

Plot No. 69, Bajrang Nagar, Manewada Road, Nagpur-440 027

Mob. : 9890447994, 7304902027

E-mail: rajniprakashan@gmail.com

ABOUT THE AUTHORS



Dr. Mrs. S. V. Kulkarni (M. Sc., M. Phil., Ph.D., B.A.), Vedang Jyotishya & Shastri. Working as Associate Professor & Head of in Department of Botany, Sevadal Mahila Mahavidyalaya Nagpur. She has vast teaching experience. She has attended many National, International Conferences, workshops and published many papers in National & International Journals. She has completed major & minor project funded by University Grants Commission. She is a fellow of Vishwashanti Multipurpose Society & life members of Vishwashanti Multipurpose Society, IWSA and NUBTA



Dr. (Mrs.) J. S. Thaware (M.Sc., B.Ed., Ph.D.), is a presently an Assistant Professor and Head Department of Botany, Seth Kesarimal Porwal College of Arts, Science and Commerce, Kamptee. She has 10 years experience of teaching and 18 papers are published in various National and International Journals of repute. She attended and presented number of papers in various National & International Conferences & symposia. She was the Principal Investigator of UGC's MRP also.



Dr. R. A. Jachak (M.Sc., B.Ed., Ph.D.) is a gold medalist at graduation (1985) while she stood second in order of merit at her Post Graduation (1997) from RTMNU, Nagpur. She had total teaching experience of over 17 years-both UG and PG level. She has been working as Assistant Professor of Botany in Seth Kesarimal Porwal College of Arts, Science and Commerce, Kamptee, Dist. Nagpur. She has published and presented more than 15 research papers in National and International Journals and Conferences. Besides being an approved Ph.D. Supervisor in RTMNU, Nagpur. She is a member of Review Team of Golden Research Thoughts (ISSN 2231-5063) which is an International Journal. She is also a author of Book "Palaeobotany and Morphology of Angiosperms" for B.Sc. Sem. II students.



Dr. V. Y. Charjan (M.Sc., Ph.D.) Working as Asst. Prof. & Head of the Department in Botany, Kamla Nehru Mahavidyalaya, Nagpur. She has vast teaching experience. She has attended many Conferences, Seminar, Workshops & published many papers in National & International Journals.

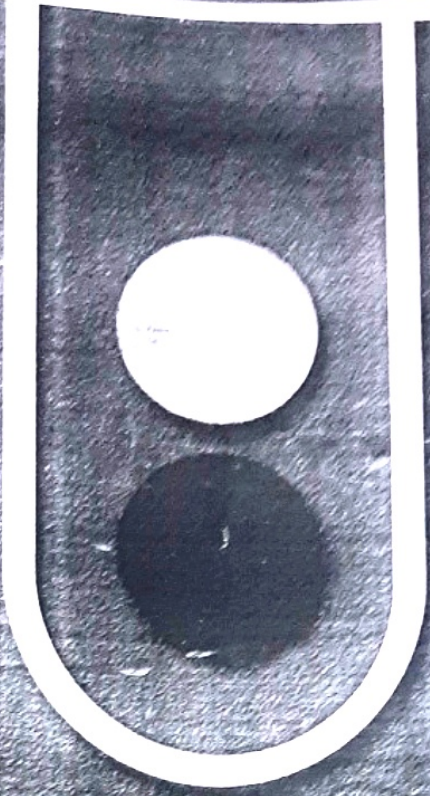
ISBN NO- 978-93-82683-17-9

M/s. Rajni Prakashan & Books Distributor

69, Bajrang Nagar, Manewada Road, Nagpur-440027.

M.: 9890447994, 7304902027

E-mail : rajniprakashan@gmail.com



संत साहित्यातील
सामाजिक बंडखोरी
आकलन आणि चिकित्सा

संपादक
डॉ. कल्पना एस. बोरकर



संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी : आकलन आणि चिकित्सा
संपादक : डॉ. कल्पना एस. बोरकर

प्रकाशक

सचिन जगदीश उपाध्याय

विजय प्रकाशन

हनुमान गल्ली, सीतावडी,

नागपूर ४४००१२

☎ (०७१२) २५३०५३९

E-mail : info@vijayprakashan.com

Website : www.vijayprakashan.com

© सुरक्षित

मुद्रणस्थळ

रवीन्द्र आर्टस्

नागपूर ४४००१२

मुखपृष्ठ

संतुक गोलेगावकर

प्रथम आवृत्ती

२ जानेवारी २०१९

किंमत ४५० ₹

ISBN 978-93-87042-52-0

अनुक्रमणिका

- ◆ संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी । डॉ. राजन गवस १
- ◆ संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी । डॉ. अक्षयकुमार काळे ५
- ◆ विजभाषण । प्रा. वसंत आबाजी डहाके १३
- ◆ संतांची सामाजिक बंडखोरी । डॉ. अलका गायकवाड २२
- ◆ संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी । डॉ. राजेंद्र नाईकवाडे २७
- ◆ स्त्री संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी । डॉ. पद्मरेखा धनकर ३८
- ◆ महाराजांच्या सामाजिक बंडखोरीतील द्रष्टेपण ।
डॉ. सुधा लक्ष्मणराव पेशकर ४४
- ◆ संत चोखामेळा : सामाजिक विषमतेविरुद्ध भक्तियुक्त बंडाचे प्रतीक । ५२
हेमराज डी. निखाडे / राहुल राऊत
- ◆ संत बसवेश्वरांच्या साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी । ६१
डॉ. जनार्दन काटकर
- ◆ कबिरांची परखड वाणी । डॉ. देवमन द. कामडी ६६
- ◆ “गोरगरिबात देव शोधणारा आधुनिक संत गाडगेबाबा” । ७४
प्रा. सूरज गोंडाणे
- ◆ संत साहित्य आणि सामाजिक परिवर्तन । डॉ. भूषण रामटेके ८२
- ◆ संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी । डॉ. राखी जाधव ८६
- ◆ संत एकनाथांच्या भारूडातील सामाजिक बंडखोरी । ९३
डॉ. महेश बापुरावजी जोगी ✓
- ◆ संत तुकडोजी महाराजांच्या साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी । ९९
प्रा. बलदेव थावरा राठोड
- ◆ संत तुकारामांचे समाज प्रबोधन । १०४
प्रा. डॉ. सौ. शुभांगी परांजपे (डोरले)
- ◆ विदर्भातील संतांची सामाजिक दृष्टी । १०९
प्रा. डॉ. दत्तात्रय बाजीराव वाटमोडे
- ◆ समर्थ रामदासांची स्त्रीविषयक भूमिका । प्रा. डॉ. सौ. अलका बडगे ११५
- ◆ आध्यात्मिक बुवाबाजी आणि संत तुकारामांचे विचारधन । १२३
प्रा. नरेश दे. आंबिलकर

सोळा / संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी

संत एकनाथांच्या भारूडातील सामाजिक बंडखोरी

डॉ. महेश बापुरावजी जोगी

'भारूड' ह्या लोकसाहित्याला शिखरावर आरूढ करण्याचे काम संत एकनाथांनी केले आहे. म्हणूनच त्यांना प्रामुख्याने आद्य लोकसाहित्यकारही म्हणून ओळखले जाते. त्यांच्या 'भारूड' ह्या काव्यप्रकारात कवीच्या लोकोन्मुख वृत्तीची साक्ष पुरेपूर मिळते. त्यांनी प्रचंड प्रमाणात भारूडाची निर्मिती केली असून त्या भारूडांच्या माध्यमातून वैचित्र्य, व्यापकत्व, ठसठसीतपणा, रूपकत्व, विनोद, आत्मबोध, नीती, बंडखोरी ह्यासारखे विविध विषय घेऊन त्यांनी भारूड समाजात बहुरूढ केले.

एकनाथ महाराजांची भारूड निर्मिती होण्यामागील कारणे शोधली तर असे लक्षात येते की, तत्कालीन परिस्थितीतील समाजरचना ह्याला कारणीभूत होती. त्याच्यः काळात समाजाला स्थैर्य प्राप्त झालेले नव्हते. राजकीय परिस्थिती ही अस्थिर होती. यवन सरदारांचे प्राबल्य सगळीकडे वाढले होते. हिंदू आणि यवन यांच्यातील संघर्ष. त्यामुळे प्रजा ही पूर्णपणे होरपळून निघत होती. जो तो संधीच्या स्वार्थासाठी पुढे सरसावलेला होता. त्यामुळे समाजात पुंडपाळेगारांची पुंडाई निर्माण झाली होती आणि प्रजा हवालदिल बनत होती. ब्राह्मण वर्गाचा समाजात कर्मठपणा वाढला होता. खरा मार्ग काय आहे, ह्याचे ज्ञान तो वर्ग सांगू शकत नव्हता. त्यामुळे लोक वेगवेगळी व्रते करून आपापली कर्मे करित होती. त्याचे वर्णन एकनाथ महाराजांनी पुढीलप्रमाणे केले आहे,

'कोणासी न कळे अवघे जहाले मूढ ।
म्हणती हे गूढ वाया शास्त्र ॥
आपुलाला धर्म ना चरती जनी ।
अपीळ धरणी पीक न होय ॥

ब्राह्मणांनी कर्मठपणा वाढवून स्नानसंध्या, वेदपठण, अग्निहोत्र, इत्यादींचा

संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी / ९३

त्याग करून जाण-माण, उघाटण या कामात ते गुंतले होते. म्हणून एकनाथ महाराज त्यांचे तोंड फोडण्याची भाषा पुढील भारूडातून सांगतात.

*हिंडे दारोदार म्हणजे पुराणिक ।
पोटासाठी देख सोंग करी ।
वेद शास्त्र नीती नाही ।
सैरावैरा बोलणे पाही ।
एका जनार्दनी पाषांड ।
म्हणोनि फोंडा त्यांचे तोंड ॥*

ही जी स्थिती ब्राह्मणांची झाली होती. तीच स्थिती संन्यासी फकीर, जपी-तपी, महंत, गोसावी, मानभाव, बैरागी, जंगम यांचीही झाली होती. सर्वसंग परित्याग करून परमार्थात आयुष्य खर्ची घालणारी ही मंडळी पोटासाठी वाटेल ते अमंगळ आचरण करण्यासाठी तत्पर झाली होती. जसे-

*त्यागुनी कर्म जाहला संन्यासी ।
ज्ञान ध्यान नाही मानसी ॥
शिखा सूत्र त्यागून जाण ।
करी दंडासी ग्रहण ।
नित्य भिक्षा पुत्राधरी ॥
मठ बांधोनी राहे द्वारी ।
वायांची नारा कायेचा ॥*

समाजात बुवाबाजीने कशाप्रकारे अवहंवर मांडले होते त्याचे वर्णन एकनाथ महाराज प्रस्तुत भारूडातून सांगितले आहे. संन्याशी लोकांनी त्यांचे जे कार्य प्रामाणिकपणे करायला पाहिजे ते त्यांनी केले नाही तर आपला गोताबळा वाटवून त्या गोताबळ्यातून आपली मठे निर्माण केली आणि सामान्य अज्ञ जनतेला खऱ्या अर्थाने फसविण्याचे काम केले अशा लोकांची काया म्हणजे सर्वनाश आहे. असे नाथमहाराज सांगतात. हा सर्व संन्याशी समाज नीतिमत्तेपासून परावृत्त झाला होता. त्यांना सरळ मार्गाने आणण्यासाठी एकनाथ महाराजांना भारूडांची रचना करणे क्रमप्राप्त झाले होते.

एकनाथ महाराजांची समाजसुधारकाची भूमिका

हा दासळलेला समाज पुन्हा जाग्यावर आणण्यासाठी एकनाथ महाराजांना समाजसुधारणेचे काम हाती घ्यावे लागले. कारण समाजातील दुष्ट प्रवृत्तीचा जोपर्यंत नाश होत नाही तोपर्यंत समाज सत्प्रवृत्तीच्या मार्गा लागत नाही. हे धिन्न हेरून एकनाथ महाराजांनी समाजातील अनेकविध पात्रांना आपल्या भारूडात स्थान देऊन त्यांच्या माध्यमातून समाजप्रबोधनाचे कार्य केले. वास्तविक पाहता ही सर्व पात्रे

९४ / संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी

म्हणजे संस्कृतीची चालती-बोल्की अवयवे होती या अवयवांच्या माध्यमातून समाजात सत्प्रवृत्ती जागी करण्याचे काम एकनाथ महाराजांनी केले. अध्यात्मज्ञानापासून दूर जाणाऱ्या या समाजाला आपल्या भारूडातील पात्रांच्या मुखातून तत्त्वज्ञान साध्या-सोप्या भाषेत सांगून त्यांना सुधारण्याचा प्रयत्न केला. त्यामुळे त्यांची प्रबोधनाची भूमिका अतिशय प्रासंगिक ठरली आणि बहुजन समाजाच्या पंचनी ती पडली.

नाहीतरी बाध्या, मुरळी, फकीर, मानभाव, मठ, बासुदेव, जोशी, शकुनी ही सारी मंडळी समाजात बाबरत होतीच आणि कुठलीतरी गाणी गाऊन समाज मनोरंजन करीत होताच. मग एकनाथ महाराजांनी त्यांच्याच तोंडातील ती जुनी गीते बाजूला सारून अध्यात्म विषय करणारी नवी वाङ्मयरचना तयार करून ती त्या त्या पात्रांच्या तोंडी घालून ती समाजातील सर्व घटकांपर्यंत पोहचविली ती वाङ्मय रचना म्हणजे नायांची लोकप्रिय 'भारूड' रचना होय. ह्या भारूडामधूनच एकप्रकारे एकनाथ महाराजांनी सामाजिक बंडखोरी निर्माण केलेली दिसते जी काही निबडक भारूडाच्या माध्यमातून पुढीलप्रमाणे पाहता येतील जसे कुत्रे, जोहार, नीती ह्या भारूडातून त्यांनी समाजातील विसंगती सांगण्याचाच प्रयत्न केला आहे.

१) कुत्रे : (३७९५)

*येरे कुत्तु ये । आम्हां विटाळ करूं नको । आपली भाकर घे ।
देरे धन्या दे । विटाळ राहिला तुज खाली । आवरून आपला घे ।*

'कुत्रे' ह्या भारूडातून एकनाथ महाराजांनी प्राण्यांना सुद्धा किती ज्ञान असते ते दाखले देऊन सांगितले आहे कारण पशुपक्षी जरी असले तरी प्रत्येक प्राण्यात जीवा-शिवाचे नाते असते. म्हणून कोणासही कमी लेखू नये तर त्यांचा सुद्धा सन्मान करावा. परंतु उच्चवर्गीय म्हणविणारे ब्राह्मण हे कुत्र्यास तुच्छ लेखून त्याचा विटाळ आपल्याला होतो म्हणून कमी लेखत असत. तेव्हा त्यांच्या ह्या अहकाराचे गर्बहरण करण्यासाठी एकनाथ महाराजांनी हे भारूड रचले आहे. केवळ उच्च वर्णात जन्मास आले म्हणून ते श्रेष्ठ असे नसून खालच्या वर्णात जन्म घेणाऱ्या व्यक्तीला जर ज्ञान प्राप्त होत असेल आणि तो सत्य परिस्थिती सांगत असेल तर त्या उच्च वर्णातल्या वर्गाला सुद्धा खाली पाहावे लागते हेच ह्या भारूडातून नाट्यमयरीत्या एकनाथ महाराज वर्णन करून सांगतात. वास्तविक पाहता विटाळानेच मानवाचा जन्म होत असतो. त्यामुळे विटाळाला कमी लेखू नये कारण कामक्रोदाधी विकार हे प्रत्येकांच्याच हृदयात असतात. त्यामुळे त्यांचा देह हा विटाळानेच भरलेला असतो. म्हणून त्याने आधी ह्या कामक्रोधावर विजय मिळविला पाहिजे असे कुत्रा त्या ब्राह्मणाला उपदेश करतो. कारण कुठलाही जीव हा परमेश्वरांचाच अंश आहे. त्यामुळे तोही अमर असून त्यांच्या हृदयात परमेश्वराचा निवास असतो. म्हणून उचा कोण कुठे असणार याचा

संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी / ९५

नेम नसतो असा उलट प्रश्न तो कुत्रा त्या ब्राह्मणाचा करतो. तुला एवढे ज्ञान कोटून मिळाले असा प्रश्न कुत्राच्या विचारल्यावर तो सांगतो, मला माझ्या सद्गुरूने हे ज्ञान दिले आहे. हा सद्गुरू कोठे असतो असे विचारल्यावर कुत्रा त्याला सांगतो सद्गुरू हा सर्वप्राणिमात्रांच्या ठायी असतो. त्याला ओळखावे लागते. तुम्ही अविचेच्या योगाने ग्रासले असल्यामुळे तुम्हाला हा सद्गुरू किंवा परमात्मा ओळखता आलेला नाही. म्हणून तुम्ही उच्चनिच हा भेदभाव पाळत आहात. शिवाय तुम्ही ब्राह्मण कुळात जन्माला येऊनसुद्धा 'ब्रह्म ज्ञाना नीति ब्राह्मण' या वचनानुसार वागत नाही तर भेदभाव पाळता त्यामुळे तुम्ही खऱ्या अर्थाने ब्रह्म पाळणारा ब्राह्मण व्हावा आणि हरिरूपात तल्लीन होऊन जन्ममृत्यूच्या जाचातून मुक्त व्हावे त्यामुळेच तुम्हाला अमरत्व प्राप्त होईल. ब्रह्मविद्या प्राप्त करणाऱ्यांना बाजूला सारू नका तर आपल्या हृदयात चैतन्यत्वाची दृष्टी बाळगा, तरच तुमचे कल्याण होणार आहे. हे सर्व ज्ञान मला माझे गुरू एकनाथ महाराज यांनी दिले आहे असेही तो म्हणतो. म्हणजे ह्या भारुडातून एकनाथ महाराजांनी पशुप्राण्यांविषयीचा जिव्हाळा व्यक्त करून तोही परमात्म्याचा एक अंश असतो अशी विश्वव्यापक जाणीव ह्या भारुडातून व्यक्त करून सामाजिक बंडखोरीच बयाण केली आहे. ब्राह्मणांचे श्रेष्ठत्व केवळ जन्माने प्राप्त होत नाही तर त्याला कमनि ते प्राप्त करावे लागते. हाही आशय ते या भारुडातून बोलून दाखवितात.

२) जोहार : (३८६३)

कां रे महारा बढमस्ता ।
कां हो ब्राह्मण बावा भलतेंच बोलतां ।
तुझे बापाचें भय काय ।
मायबाप तुमचें आमचें एकच हाय ।
एक ऐसें बोलूं नको ।

'जोहार' ह्या भारुडातूनही एकनाथ महाराजांनी संकुचित वृत्तीचा देहाहंकारी ब्राह्मण व ज्ञानी महार यांच्यातील संबाद रंगविला असून सर्व जीवांच्या ठायी एकच चैतन्य भरलेले आहे या गोष्टीचा विचार न करता ब्राह्मण हे विपमतेच्या दृष्टीने उच्चनीच भेद करतात, हे तत्कालीन परिस्थितीतील सामाजिक चित्र आपल्या भारुडातून मांडतात आणि सामाजिक समतेचा संदेश देतात. ब्राह्मणबुवा हा महाराजाला मातला असे म्हणून म्हणतो तर महारही त्याला अत्यंत संयत शब्दात प्रत्युत्तर देताना म्हणतो, ब्राह्मणबुवा भलते-सलते बोलू नका कारण तुम्ही ज्या जगनाथापासून जन्मले आहात त्यांच्यापासून आम्ही सुद्धा जन्मले आहोत त्यामुळे हा भेदाभेद करण्याचा अधिकार तुम्हाला नाही. कारण तुमचे आणि आमचे मायबाप एकच आहेत. त्या परमेश्वरांचीच आपण सारी लेकरे आहोत. त्यामुळे तोच आपला माता आणि पिता आहे.

९६ / संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी

निर्गुणाविषयी सांगताना महार म्हणतो, निर्गुणस्वरूप हे बाहेर दाखविण्याची गोष्ट नाही तर ते प्रत्येकाच्याच आत्म्यात/अंतःगत असते. त्याला शोधवे सांगते. ते आत्मस्वरूप एकदा का कळले की आपल्या अहंकाराचा नाश होतो आणि आपण सारी परमेश्वरांची लेकरे आहोत हा विश्वव्यापक विचार येतो. पण तुम्हाला हे आत्मस्वरूप कळले नसेल तर परमेश्वरांचा अंश असणाऱ्या संताला तुम्ही रागण जा म्हणजे तुम्हाला ते चौऱ्यांगीचा फेरा काय असतो ते दाखवेल आणि तुम्ही आत्मस्वरूप होऊन सुखरूप व्हाल. कारण मला हे ज्ञान माझा गुरू एकनाथ महाराज यांनी दिले आहे. म्हणून मी सुखरूप आहे. ह्या भारुडातून एकनाथ महाराजांनी तत्कालीन परिस्थितीतील पैठणच्या ब्राह्मणांना दिलेली चपराक आहे. कारण जातिभेद पाळल्याने कुणाचेही भले होत नसते तर समाजात दरी निर्माण होत असून समाज दुर्भंगत असतो आणि एकोपा राहत नाही तेव्हा आपल्याला सर्वांना एकत्र घेऊन पुढे वाटचाल करावची आहे. हाच संदेश ते या भारुडातून देतात. त्यात त्यांची विद्रोही भूमिका दिसते.

३) नीती : (३८००)

नीती सांगतों एका दास । दास समेचा सेवक ।
मन टाळूं नका एक । कोणी एक ॥ ५॥

'नीति' ह्या भारुडातून संत एकनाथांनी मानवाला एकप्रकारची आचारपद्धतीच सांगितली आहे. कारण समाजातील दृष्टप्रवृत्तीचा जोपर्यंत नायनाट होत नाही आणि सत्प्रवृत्ती जोपर्यंत विकसित होत नाहीत, तोपर्यंत समाजास चांगल्या स्वास्थ्याची आशा करता येत नाही. म्हणूनच मानवी मनाची ठेवण बदलून सदाचार त्यांच्या अंगवळणी पाडण्यासाठीच एकनाथ महाराजांचा हा खटाटोप असलेला दिसतो. ऐहिक वैभवापेक्षा मानवता अधिक महत्त्वाची असल्याकारणाने समाज सद्गुणांनी पुष्ट व्हावा. मानवी मनात सद्भावनांची ज्योत प्रज्वलित व्हावी. हीच त्यांची एकमेव मनीषा होती. सामाजिक विनाश टाळण्यासाठी आणि पारमार्थिक नि ऐहिक सुख साधण्यासाठी नीती, सदाचार आणि सत्प्रवृत्ती या मूलभूत तत्त्वांवर दृष्टी ठेऊन त्यांनी त्यांच्या प्रसारासाठी प्रयत्न केले. त्याचे सार 'नीति' ह्या त्यांच्या भारुडात आपल्याला पाहायला मिळते. समाजातील प्रत्येक व्यक्तीने समाजात वावरताना कोणती नैतिक गून्चे आचरणात आणायला हवीत हे नाथांनी या भारुडात सांगितले आहे. ते म्हणतात, तुम्ही इमान सोडू नका, बेईमान होऊ नका, लाच खाऊ नका, सज्जनाला विसरू नका, दुर्जनाचा राग ठेवू नका, भक्तीमार्ग सोडू नका, भांडण-तंटे करू नका, सत्यरुषाला छळू नका, शिऱ्या देऊ नका, केलेले व्रत-नेम सोडू नका, गुरूसेवेला आणि स्वधर्माला सोडू नका, पापाचा पैसा मिळवू नका. श्रीमंती आल्यावर माजू नका, वृथा अभिमान

संत साहित्यातील सामाजिक बंडखोरी / ९७

घरू नका, मनात कपट घरू नका. या जन्मात आल्याचे सार्थक करा आणि संताचं चरणी लीन होऊन हरिनाम उच्चार. त्या हरिनामानेच आपले सार्थक होणार आहे.

असे वागल्यावर सुखी, शांत, समाधानी व सुदृढ समाजाची निर्मिती होईल. हा मूल्य विचार समाजात रूजविण्यासाठी एकनाथ महाराजांनी आपल्या भारुडाच्या माध्यमातून लोकशिक्षकांचीच भूमिका घेतलेली दिसते. आजच्या परिस्थितीमध्ये सुद्धा एकनाथ महाराजांच्याच विचारांची नितांत गरज असल्याचे चित्र समाजाचे अवलोकन केले असता दिसते. कारण आजही समाजात ढोंगी, लोभी, सत्तापिपासू बाबांचे पीक प्रचंड मोठ्या प्रमाणात आले असून ह्या बाबा लोकांनी समाजाचे प्रचंड मोठ्या प्रमाणात न भरून निघणारे असे नुकसान केले आहे, हे रामरहिम, आसाराम, पाटीलबाबा ह्यांच्या उदाहरणावरून आपल्या लक्षात येते. म्हणून संतांना अभिप्रेत असणारी सामाजिक बंडखोरी आजच्याही काळात फार आवश्यक आहे हेच ह्या शोधनिबंधाच्या माध्यमातून मांडण्याचा प्रयत्न केला आहे.



एस.एफ.एस. महाविद्यालय, सेमिनरी हिल्स, नागपूर

संदर्भ ग्रंथ

- १) संत वाङ्मयाची सामाजिक फलश्रुती, संपा. गं. बा. सरदार, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई, चौथी आवृत्ती, १९८२.
- २) श्री एकनाथ महाराजांची निवडक भारुडे, संपा. प्रा.एल. जी. सोनवणे, प्रशांत पब्लिकेशन्स, जळगाव, २००८.
- ३) भारुड वाङ्मयातील तत्त्वज्ञान, संपा. डॉ. रामचंद्र देखणे, पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, २००२.
- ४) श्री एकनाथ महाराजांची भारुडे भाग दुसरा, संपा. श्री. ना. पि. बडवे, श्री. एकनाथ संशोधन मंदिर प्रकाशन, औरंगाबाद, १९७८.
- ५) श्री. एकनाथ महाराजांची भारुडे संहिता व समीक्षा, संपा. डॉ. मदन कुलकर्णी, पिंपळापुरे अॅण्ड कं. पब्लिशर्स, नागपूर, १९९८
- ६) एकनाथकालीन मराठी साहित्य, संपा. डॉ. हेमन्त वि. इनामदार आणि डॉ. वसंत स. जोशी, दिलीपराज प्रकाशन, पुणे, १९९०
- ७) संत एकनाथ, संपा. डॉ. सौ. सुभा साठे, निशिगंधा बुक एजन्सी, नागपूर २०१०.

Transforming Rural Development In India Using e-Skills

Dr. Kishor M. Dhole

Assistant Professor, Department of Computer Science and IT,
Seth Kesarimal Porwal College of Arts, Science and Commerce, Kamptee-441001

Abstract:

E-Skills are the need of hour for shaping and fulfilling the aim in rural transformation. This paper imposed on the importance and need of e-skills in rural area. This study proposed that Information Communication Technology (ICT), Artificial Intelligence (AI) and Internet of Things (IoT) based education skills works as a fundamental part to develop employability and livelihood opportunities, reduce poverty, and enhance productivity. It helps to promote environmentally sustainable development for rural youth. This paper suggested that e-Skills education with coordinated efforts needed to change the scene in rural area completely.

Keywords : E-Skills, Artificial Intelligence (AI), Information Communication Technology (ICT), Internet of things (IoT).

Introduction:

India is acknowledged as one of the youngest nations in the world with all over 50% of the population in coming years. It is projected that by about 2025, India will have the 25% of the total global workforce [1]. Hence, there is a need to further develop and empower the human capital to ensure the nation's global competitiveness. As per the economic progress of our country is concerned, India is still positioned lagging behind due to various problems like poverty, unemployment, illiteracy, medical infrastructure etc. Youth plays a crucial role in achieving economic prosperity of the country[2].

Literature Review:

After studying various reports Government of India's ministries, NGO's, World Bank Reports, NeGP and CSR [3],[4],[5],[6],[7]. In the present scenario, it is found that most of the youth being educated are facing severe unemployment problem due to lack of skills and technical knowledge. Most of them are unaware of the developments taking place in the modern world. The present paper is based on the secondary data which was collected from different researches and reports. The study focused on

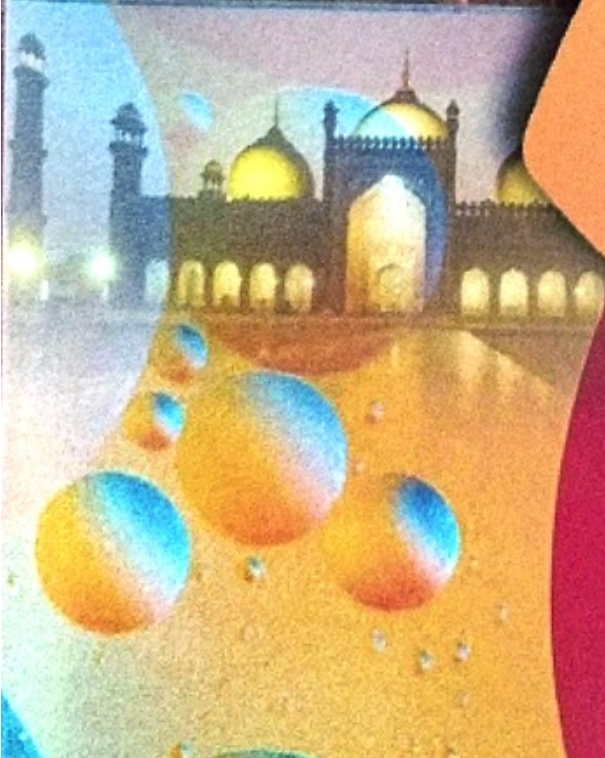
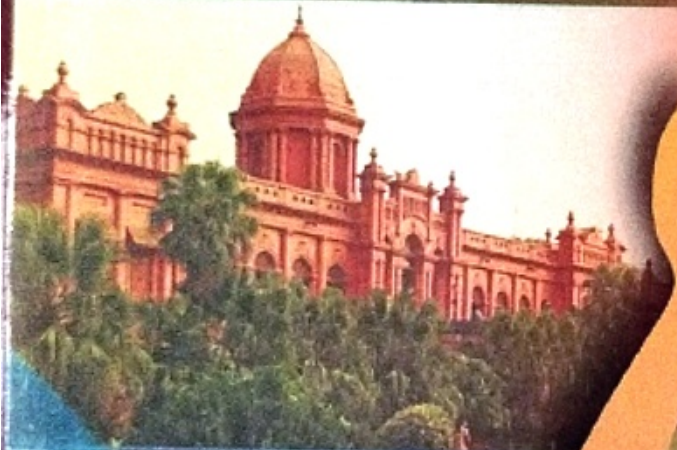
the e-skill development programmes implemented in India. This study is to investigate the existing literature for the skill development programmes and leveraging the demographic proportion in India by making them more skilled and employable. This literature survey is to review the various initiatives taken by Government of India, programmes conducted through public and private partnership, ways to increase the employability skills, challenges faced for the success of the programme, etc. The study also discusses about the skills conveyed through educational programmes and requirement of additional sector specific courses[8]. Hence, the paper will highlight the needs, challenges and scope of the e-skill development programmes.

III. Need of E-Skills in Rural Development:

The rural peoples in India have many more problems in their domain due to lack of knowledge, education, ill-literacy and lack of awareness. These rural people have limited access to education and training is often limited by financial barriers (e.g. training and transportation costs) and non-financial barriers (e.g. scarce education and training infrastructure, inflexible training schedules). Especially for poor rural

TRANSNATIONAL FEMINISM : South Asia and Beyond

Farzana S. Ali



TRANSNATIONAL FEMINISM:
SOUTH ASIA AND BEYOND

© Editor: Farzana S. Ali

First Published 2020

ISBN No: 978-81-7192-182-9

[No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher].

Typeset by: PrePSol Enterprises Private Ltd.

Printed at: Anvi Composers, New Delhi

Published in India by

DATSONS

Jawaharlal Nehru Marg

Sadar, Nagpur-440001 (Maharashtra)

dattsonspublishers@gmail.com

6. Negotiating New Boundaries Through Feministic Consciousness: A Study of Chitra Banerjee's Fiction with special thrust on The Forest of Enchantments (2019) 77
Dr Jyoti Patil
7. Cultural dislocation and Loss of Identity: Diasporic Point of View in Jhumpa Lahiri's "The Namesake." 89
Dr Usba Sakure
8. Exploring Bapsi Sidhwa's The Pakistani Bride Focusing on Subaltern Consciousness and Resistance. 101
Dr Ajiat Jachak
9. Exploring the Theme of Diaspora in Kiran Desai's 'The Inheritance of Loss'. 112
Dr Swapnil R. Dabat
10. Exploring the Elements of Diaspora and Feminism in the Select Novels of Bharati Mukherjee 122
Dr Gazal R. Hashmi
11. A Study of Feminine Angst in the Poems of Taslima Nasreen 130
Dr Renuka L. Roy
- ✓12. Taslima Nasrin's French Lover: A Transnational Post-Feminist Text 139
Dr Vinod R. Shende
13. Transnational Feminism in Kamila Shamsie's The Burnt Shadows 146
Dr Pramod Salame



CHAPTER 12

Taslina Nasrin's French Lover: A Transnational Post-Feminist Text

Dr Vinod R. Shende

Abstract

Transnationalism as concept, theory, and experience has nourished an important literature in social sciences. Transnationalism refers to increasing functional integration of processes that cross borders the relations of individuals and groups and firms to mobilize beyond state boundaries. The term post-feminism is not monolithic and consensual. It has diverse implications. In popular culture it refers to the rejection of feminist thought, however, in academics the 'post' in post-feminism implies a process of ongoing transformation and change rather than assuming patriarchal discourse and frames of reference have been replaced or superseded. Generally, the form post-feminism



व्यवसायिक आधिनियम

निशिता गोपाल चिमोटे



व्यावसायिक अधिनियम

निशिता गोपाल चिमोटे

(एम.कॉम., एम. फिल. नेट)

सहायक प्राध्यापक

सेठ केसरीमल पोरवाल महाविद्यालय ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स, कामठी

स्वास्तिक पब्लिकेशन्स

नयी दिल्ली-110002



Published in India by

स्वास्तिक पब्लिकेशन्स

213, वरदान हाऊस, 7/28, अंसारी रोड,
दरियागंज, नयी दिल्ली - 110002

दूरभाष : 9968482939

ई-मेल : swastik_books@yahoo.com

Regd. Office:

31 गली न0 1, ए ब्लॉक, पाकेट-5

सोनिया विहार, दिल्ली - 110 090

दूरभाष : 9899462604

ई-मेल : swastik_books@yahoo.com

व्यावसायिक अधिनियम

ISBN : 978-81-949757-6-2

© लेखक

प्रथम संस्करण : 7 मार्च 2020

मुद्रक

ट्राइडेन्ट एंटरप्राइजेज़, नॉएडा

प्रस्तावना

व्यवसाय एक ऐसी गति
सेवाओं का उत्पादन, विक्रय
किया जाता है। व्यवसाय के
तथा सेवाओं के उत्पादन एवं
सेवाओं द्वारा समाज की आवश्यकता

जब हम अपने आस-पास
न किसी काम में संलग्न हैं। उ
करते हैं, मजदूर कारखानों में
सामान बेचते हैं, चिकित्सक रं
आदमी दिन भर, या कभी-क

भारत, आज औद्योगिक
वस्तुओं का उत्पादन देशी त
परिणाम नहीं निकाल लेना च
उन्नत नहीं थी, जबकि हमें
धरोहर पर गर्व है।

पुस्तक लेखन में कई
सभी विज्ञ लेखकों के प्रति अ
पाठकों के लिए उपयोगी हो



व्यावसायिक अधिनियम का मतलब कानूनों के उस समुच्चय से है जो व्यापार, वाणिज्य, क्रय-विक्रय में लगे व्यक्तियों एवं संगठनों के अधिकार, सम्बन्ध तथा व्यवहार का नियमन करता है। प्रायः इसे सिविल कानून (दीवानी कानून) की एक शाखा के रूप में देखा जाता है। व्यापारिक सन्धियों में उन अधिनियमों को सम्मिलित किया जाता है जो व्यवसाय एवं वाणिज्यिक क्रियाओं के नियमन एवं नियन्त्रण के लिए बनाये जाते हैं। व्यावसायिक सन्धियों में उन सभी नियमों का समूह है जिसमें व्यावसायिक संबंधों और व्यापार संबंधी क्रियाओं से सम्बंधित प्रत्येक वैध सिद्धान्तों का समावेश होता है।



निशिता गोपाल चिमोटे

एम.कॉम., एम.फिल., नेट

सहायक प्रध्यापक

सेठ केसरीमल पोरवाल महाविद्यालय ऑफ आर्ट्स, साइन्स

एंड कॉमर्स, कामठी



SWASTIK

स्वास्तिक पब्लिकेसन्स

213, वरदान हाऊस, 7/28, अंसारी रोड,

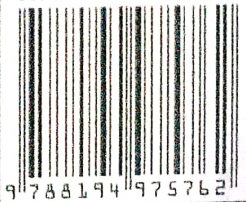
दरियागंज, नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 9968482939

E-mail : swastik_books@yahoo.com

₹ 895/-

ISBN 978-81-949757-6-2



9 788194 975762



Scanned with OKEN Scanner

National Seminar

आरोग्यम् धनसंपदा : A Lifelong Treasure
under the aegis of IQAC
14 December 2019

PROCEEDINGS



*Health is Wealth
A Lifelong Treasure*

Health Literacy Year 2019 - 2020



Estd. 1932

Organised by

Women's Education Society's

Lady Amritbai Daga College for Women of Arts, Commerce & Science &
Smt. Ratnadevi Purohit College of Home Science and
Home Science Technology, Nagpur

(Re-accredited 'A' Grade by NAAC Bangalore)

Recognised as College with Potential for Excellence by UGC, New Delhi

RESEARCH PAPERS

आरोग्यम् धनसंपदा : HEALTH IS WEALTH

- | | | |
|----|---|----|
| 1. | श्रीमद्भगवद्गीतेतील आरोग्यविषयक विचार Pendharkar Priya | 10 |
| 2. | आरोग्यसंपदेत योगाभ्यासाचे योगदान Shinde Mrunalini | 14 |
| 3. | Health is Wealth - A Mission towards Rural Development Merkap Dillip Kumar | 18 |

DIET, FOOD AND NUTRITION

- | | | |
|----|---|-----------|
| 1. | सुदृढ शरीराच्या त्रयोपस्तम्भातील एक स्तम्भ : आहार Vyas Aboli | 23 |
| 2. | आमलकस्य महत्त्वम् Kahalekar Gananjay | 30 |
| 3. | Recent Insights of Nutrition in Sickle Cell Patients Chahande Ragini and Ansari A. H. | 36 |
| 4. | We are What We Eat - Scientifically Revisiting the Notion Begde Deovrat | 40 |
| 5. | Effects of Microwave Cooking on Health Joglekar Mrunmayee | 53 |
| 6. | Mood-Stabilizing Role of Some Micronutrients Chahande Shalini | 57 |
| 7. | Docosahexaenoic acid - A Health Booster Das Renuka, Umekar Milind, Duragkar Nandkishor, Raut Kunal and Kale Mayur | 62 |

Recent Insights of Nutrition in Sickle Cell Patients

Chahande Ragini and Ansari A. H.

Department of Biochemistry, Seth Kesarimal Porwal College, Kamptee.

Abstract

Sickle cell disease is a genetic disorder that causes red blood cells to take sickle shape. Sickle cell anaemia patients often experience pain episodes, fatigue and frequent infections. A cure for this disease is not available. However, increasing knowledge that nutritional problems are fundamental to the severity of the disease, has produced interest in promoting dietary supplementation for treating these patients. This article emphasizes the understanding that sickle cell anaemia patients require a diet rich with macro and micronutrients which include higher energy and proteins than healthy individuals. They suffer from undernutrition if energy intake is consistently low. The severity of disease increases due to oxidative stress and chronic inflammation. Good diet is of essence in the life of people with this disorder.

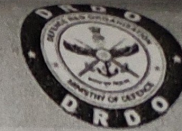
Key words : Sickle cell disease, Dietary supplementation, Oxidative stress.

Introduction

Nutrition has a strong impact on chronic health conditions associated with SCD. Energy shortage is the basic problem with sickle cell anaemia patients. In sickle cell anaemia patients amino acids from the proteins and other nutrients from the diet are diverted towards the production of red cells, which replace haemolysed red cells. This increases the requirement of energy and in children reduces the availability of nutrients for growth and development. In addition to that when compared with healthy controls sickle cell anaemia patients show elevated RMR. (Resting Metabolic Rate)

Macronutrients Deficiency

Arginine : In the synthesis of nitric oxide in endothelial cells, amino acid arginine plays an important role. This nitric oxide stimulates relaxation of muscle cells, which regulates the blood flow and blood pressure. In sickle cell patients arginine metabolism is impaired which contributes dysfunction of endothelial cells, vaso-occlusive crises and pulmonary hypertension. Over time, arginine deficiency develops, leads to disruption of oxidative stress. Supplementation with L-arginine to non-sickle cell anaemia subjects and sickle cell anaemia patients showed increase in plasma arginine and nitric oxide in sickle cell anaemia patients than in non SCD subjects ¹, thus reducing oxidative stress. Supplementation of food with arginine has also shown to increase total antioxidant activity and erythrocyte integrity in SCD subjects ². High nitrate content food includes beets, spinach, radish, celery and mustard greens ³. Vitamin A (β - Carotene) work with arginine derived nitric oxide combat oxidative stress ⁴.



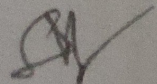
INTERNATIONAL CONFERENCE ON RECENT TRENDS IN ELECTRONICS AND INSTRUMENTATION
(ICRTEI - 2019)

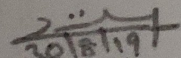
Department of Electronics & Instrumentation
Bharathiar University, Coimbatore - 641046

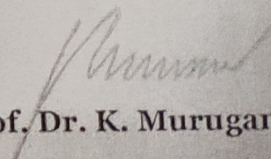
CERTIFICATE

This is to certify that Mr./Ms./Dr. R.K. PARATE, FACULTY, S.K. PORWAL COLLEGE, KAMPSEE has
Participated / Presented a Paper entitled... DESIGN OF A NDDE MCU BASED BIDMEDICAL
SIGNAL MONITORING SYSTEM.....

in the International Conference on Recent Trends in Electronics and Instrumentation (ICRTEI - 2019) held during 29th – 30th August 2019
organized by the Department of Electronics and Instrumentation, Bharathiar University, Coimbatore, Tamil Nadu, India and co-sponsored by
the Defence Research and Development Organisation (DRDO), Government of India.


Dr. S. Muruganand
Organizing Secretary


2018/19
Dr. J. Vijayakumar
Chairman


Prof. Dr. K. Murugan
Registrar i/c



Dharampeth Education Society's
**R. S. MUNDLE DHARAMPETH ARTS &
COMMERCE COLLEGE, NAGPUR**

**One-Day Multi-Disciplinary National Conference on
Gender Empowerment: Opportunities and Challenges**



CONFERENCE VOLUME

| | | | |
|----|---|--------------------------------|---------|
| 16 | स्त्री सबलीकरण | प्रा. श्रीमती. मंजुश्री काशीकर | 89-95 |
| 17 | Empowered Women down the Ages | Ms. Shanoor Mirza | 91-98 |
| 18 | आधुनिक युग में महिला सशक्तीकरण | जया मुनघाटे | 99-103 |
| 19 | Fitting into the frame which is not like you | Ms. Heena Nagbhire | 104-108 |
| 20 | Gender Empowerment : Problems and Challenges | Dr. Seema Pagey | 109-117 |
| 21 | महिला सक्षमीकरणातील आव्हाने व उपाययोजना | डॉ. प्रकाश सहारे | 118-122 |
| 22 | Binary Oppositions : Paradigms of Truth | Dr. M. V Sardeshpande | 123-126 |
| 23 | प्रद्योगिकी विकास में महिला सशक्तीकरण में उपादेयता का अध्ययन | Shri. Prabhudayal Yadav | 127-131 |
| 24 | Political Participation of Women in India | Ms. Shital Bonde | 132-135 |
| 25 | महिला सक्षमीकरण : सामाजिक व आर्थिक आयाम | प्रा. श्री. राजु बिराले | 136-140 |
| 26 | भारतीय राजनीती और नारी - एक अध्ययन | डॉ. सतीश चापले | 141-149 |
| 27 | स्वातंत्रयोत्तर भारत में भारतीय नारी का राजनीतिक योगदान | डॉ. विवेक दिवाण | 150-153 |
| 28 | Partition Wound on the Women Psyche | Ms. Shweta Gaud | 154-158 |
| 29 | Amendments in Indian Constitution for Women Empowerment | Ms. Shilpa Hirekhan | 159-162 |
| 30 | स्त्री पुरुष विषमता आणि बदलते संबंध | डॉ. विनोद जिवनतारे | 163-167 |
| 31 | Amendments in Indian Constitution for Women Empowerment (Loopholes and Advantages) with special reference to Muslim Women | Ms. Zehra Khwaja | 168-174 |
| 32 | A Study of Women Leadership, Corporate and Political Participation in Rural and Urban Region of India | Dr. Darshan Labhe | 175-185 |



Amendments in Indian Constitution for women Empowerment

S.N.Hirekhan

Librarian

S.K.Porwal College of Arts &
Science & Commerce,
Kamptee

Introduction

A woman has been humiliated from the ancient period of time. Renaissance gave rise to new thoughts which lead to change in the traditional approaches towards women. These transformations accelerated in 20th and in today's 21st century. The principal of gender equality is enshrined in the Indian Constitution not only grants equality to women, but also empowers the State to adopt measures of positive discrimination in favors of women. Within the framework of a democratic polity, our laws, development policies, plans and programmes have aimed at women's advancement in different spheres. From the fifth five year plan (1974-78) onwards has been a marked shift in the approach to women's issues from welfare to development. In recent years, the empowerment of women has been recognized as the central issue in determining the status of women. The National commission for women was set up by an Act of parliament in 1990 to safeguard the rights and legal entitlements of women. The 73rd and 74th Amendments (1993) to the Constitution of India have provided for reservation of seats in the local bodies of panchayats and Municipalities for women, laying a strong foundation for their participation in decision making at the local levels.

Women Empowerment: - Women empowerment is a global issue. The concept of women's empowerment appears to be the outcome of several important critiques and debates generated by the women's movement throughout the year. Women's empowerment can be viewed as a continuum of several interrelated and mutually reinforcing components. Awareness building about women's situation, discrimination and rights and opportunities as a step towards gender equality. Collective awareness building provides a sense of group identity and the power of working as a group. Capacity building and skill development especially the ability to plan, make decisions, organize, manage and carry out activities to deal with people and institutions in the world around them.

